गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 300
दि. 03.03.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

खामेनेई, कुम की धार्मिक शिक्षा और लखनऊ का मातम: आस्था, पहचान और वैश्विक राजनीति की परतें

ईरान में हुई एक बड़ी और हिंसक घटना की खबर जब दुनिया भर में फैली और ईरान के सर्वोच्च धार्मिक नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के निधन की सूचना सामने आई, तो उसकी गूंज केवल पश्चिम एशिया तक सीमित नहीं रही। भारत में, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में, इस घटना ने भावनात्मक और सार्वजनिक प्रतिक्रिया को जन्म दिया। छोटे और बड़े इमामबाड़े के आसपास शिया समुदाय के लोग बड़ी संख्या में एकत्र हुए। महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों के हाथों में खामेनेई की तस्वीरें थीं, आंखों में आंसू थे और वातावरण में मातमी सन्नाटा था। यह दृश्य कई लोगों के मन में सवाल पैदा करता है कि आखिर ईरान के सर्वोच्च नेता और लखनऊ के बीच ऐसा कौन-सा रिश्ता है, जो हजारों किलोमीटर दूर हुई घटना को यहां इतनी तीव्रता से महसूस किया गया।

लखनऊ ऐतिहासिक रूप से भारत में शिया मुस्लिम परंपरा का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। नवाबी दौर से यहां शिया संस्कृति, इमामबाड़ों, मजलिसों और धार्मिक अनुष्ठानों की समृद्ध विरासत मौजूद है। बड़े इमामबाड़े और छोटे इमामबाड़े के आसपास होने वाले धार्मिक आयोजन केवल स्थानीय कार्यक्रम नहीं होते, बल्कि वे एक गहरी ऐतिहासिक और आध्यात्मिक परंपरा का हिस्सा होते हैं। यही कारण है कि जब शिया समुदाय के सर्वोच्च आध्यात्मिक नेतृत्व से जुड़ी कोई बड़ी घटना घटती है, तो उसकी प्रतिध्वनि लखनऊ में सुनाई देती है।

इस विषय पर अखिल भारतीय शिया निजी कानून बोर्ड के अध्यक्ष और शिया धर्मगुरु मौलाना मोहम्मद मिर्ज़ा यासूब अब्बास ने स्पष्ट किया कि यह संबंध मूलतः धार्मिक है, न कि राजनीतिक। उनके अनुसार, शिया इस्लाम में 'मरजा-ए-तकलीद' या सर्वोच्च धार्मिक मार्गदर्शक की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैसे कैथोलिक ईसाइयों के लिए वेटिकन में पोप सर्वोच्च आध्यात्मिक प्राधिकरण माने जाते हैं, उसी प्रकार शिया मुसलमानों के लिए ईरान के सुप्रीम लीडर एक बड़े धार्मिक मार्गदर्शक के रूप में देखे जाते हैं। यह संबंध राष्ट्रीय सीमाओं से परे आस्था पर आधारित होता है।

ईरान के शहर क़ुम का इस संदर्भ में विशेष महत्व है। क़ुम को शिया इस्लामी शिक्षा का प्रमुख वैश्विक केंद्र माना जाता है। यहां स्थित हौज़ा-ए-इल्मिया (धार्मिक शिक्षण संस्थान) में दुनिया भर से छात्र उच्च स्तरीय धार्मिक अध्ययन के लिए आते हैं। भारत से भी बड़ी संख्या में शिया छात्र क़ुम में फ़िक़्ह, तफ़सीर, हदीस और इस्लामी दर्शन की पढ़ाई करने जाते हैं। मौलाना अब्बास के अनुसार, वहां केवल धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा ही नहीं दी जाती, बल्कि इस्लामी शासन व्यवस्था, नेतृत्व और समकालीन मुद्दों पर भी अध्ययन कराया जाता है। इस प्रकार जो मौलवी और आलिम क़ुम से शिक्षा प्राप्त कर भारत लौटते हैं, वे यहां धार्मिक नेतृत्व की भूमिका निभाते हैं। इस शैक्षिक कड़ी के कारण ईरान और लखनऊ के बीच एक भावनात्मक और वैचारिक सेतु बना हुआ है।

खामेनेई के व्यक्तित्व को लेकर भी शिया समुदाय में एक विशेष सम्मान की भावना रही है। उन्हें केवल एक राजनीतिक प्रमुख के रूप में नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में देखा जाता था। मौलाना अब्बास का कहना है कि वे इस्लामी सिद्धांतों के अनुरूप मार्गदर्शन देते थे और मजहबी मुद्दों पर स्पष्ट विचार रखते थे। यही कारण है कि उनके निधन की खबर ने समुदाय के भीतर शोक और असंतोष की लहर पैदा की।

लखनऊ में जो विरोध प्रदर्शन और मातम देखने को मिला, वह पारंपरिक शिया शोक-संस्कृति के अनुरूप था। शिया परंपरा में शोक को सार्वजनिक रूप से व्यक्त करना—मजलिस, जुलूस और मातम के माध्यम से—एक स्वीकृत और ऐतिहासिक अभ्यास है। इसलिए खामेनेई की मौत पर सार्वजनिक रूप से एकत्र होकर शोक व्यक्त करना धार्मिक संवेदना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति माना गया। हालांकि, कुछ स्थानों पर अमेरिका और इज़राइल के विरोध में नारेबाजी भी हुई, जो इस घटना के अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक आयाम को दर्शाती है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारतीय मुसलमानों की धार्मिक आस्था और उनकी राष्ट्रीय नागरिकता अलग-अलग स्तरों पर कार्य करती है। किसी विदेशी धार्मिक नेता के प्रति सम्मान या शोक व्यक्त करना भारतीय कानून या नागरिक निष्ठा के विरुद्ध नहीं माना जाता, जब तक कि वह शांतिपूर्ण और संवैधानिक दायरे में हो। मौलाना अब्बास ने भी स्पष्ट किया कि ईरान और लखनऊ के बीच कोई राजनीतिक या प्रशासनिक संबंध नहीं है। यह संबंध आध्यात्मिक और शैक्षिक परंपरा पर आधारित है।

सोशल मीडिया और आधुनिक संचार माध्यमों ने भी इन प्रतिक्रियाओं को तीव्र और त्वरित बना दिया है। किसी भी वैश्विक घटना की खबर अब कुछ ही मिनटों में पूरी दुनिया में फैल जाती है। इससे समुदायों की भावनात्मक प्रतिक्रिया भी तुरंत सामने आती है। लखनऊ में दिखा मातम इसी वैश्विक सूचना-युग का परिणाम भी है, जहां दूरी कम हो गई है और आस्था का जुड़ाव सीमाओं से परे दिखाई देता है।

अंततः, खामेनेई, क़ुम की धार्मिक शिक्षा और लखनऊ का संबंध एक जटिल लेकिन स्पष्ट सामाजिक-धार्मिक ताने-बाने का हिस्सा है। यह कहानी बताती है कि धार्मिक नेतृत्व और आध्यात्मिक शिक्षा की वैश्विक संरचना कैसे स्थानीय समुदायों को प्रभावित करती है। लखनऊ में उमड़ा शोक केवल एक व्यक्ति के निधन पर प्रतिक्रिया नहीं था, बल्कि वह उस वैचारिक और आध्यात्मिक संबंध की अभिव्यक्ति था, जो दशकों से निर्मित हुआ है। इस पूरे घटनाक्रम ने यह भी स्पष्ट किया कि आस्था और वैश्विक राजनीति जब एक-दूसरे से टकराती हैं, तो उनकी प्रतिध्वनि दूर-दूर तक सुनाई देती है—और कभी-कभी वह प्रतिध्वनि लखनऊ की गलियों तक भी पहुंच जाती है।

AI मिशन, प्रदूषण नियंत्रण और रोजगार पर फोकस... जानिए हरियाणा के 2026-27 बजट की बड़ी घोषणाएं

जीएनएस)। चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने विधानसभा में वित्त वर्ष 2026-27 का बजट पेश करते हुए राज्य के विकास की एक व्यापक और बहुआयामी तस्वीर सामने रखी। इस बार का बजट केवल आय-व्यय का लेखा-जोखा नहीं, बल्कि तकनीक, पर्यावरण संरक्षण, कृषि सुधार, औद्योगिक निवेश और सामाजिक सुरक्षा के समन्वित एजेंडे के रूप में प्रस्तुत किया गया। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि बजट को तैयार करने से पहले व्यापक पूर्व परामर्श किया गया और प्राप्त 5000 से अधिक सुझावों को विभिन्न योजनाओं में समाहित किया गया है, जिससे यह दस्तावेज़ अधिक सहभागी और जन-आधारित बन सके। सरकार ने वर्ष 2026-27 के लिए 2,23,658.17 करोड़ रुपये का कुल बजट प्रस्तावित किया है। मुख्यमंत्री ने बताया कि वर्ष 2025-26 के लिए कुल बजट 2,50,017 करोड़ रुपये रखा गया था, जिसमें से 31 मार्च 2026 तक लगभग 2,20,000 करोड़ रुपये के व्यय का अनुमान है। वित्तीय अनुशासन पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि वर्ष 2025-26 में राज्य का राजकोषीय घाटा जीडीपी का 2.66 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जिसे वर्ष 2026-27 में 2.65 प्रतिशत तक सीमित रखने का लक्ष्य है। राज्य ने 2026-27 के लिए 77,950 करोड़ रुपये का राजस्व लक्ष्य भी निर्धारित किया है। 16वें वित्त आयोग की सिफारिशों के अनुसार वर्ष 2026 से 2031 तक केंद्रीय करों में हरियाणा की हिस्सेदारी 1.361 प्रतिशत होगी, जिससे राज्य की आय संरचना को स्थिरता मिलने की उम्मीद है।

इस बजट की एक बड़ी विशेषता पर्यावरण संरक्षण और जल प्रबंधन पर दिया गया विशेष बल है। मुख्यमंत्री ने बताया कि विश्व बैंक के बोर्ड ने हरियाणा क्लीन एयर प्रोजेक्ट को स्वीकृति दी है, जिसके तहत वर्ष 2031 तक राज्य के सभी जिलों में वायु प्रदूषण नियंत्रण के व्यापक उपाय लागू किए जाएंगे। इस परियोजना के लिए 2716 करोड़ रुपये की सहयोग राशि उपलब्ध कराई जाएगी। इसके अलावा 'जल संरक्षित हरियाणा' परियोजना के लिए अक्टूबर 2026 तक 5715 करोड़ रुपये की स्वीकृति मिलने की संभावना है, जिसका उद्देश्य भूजल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और जल संसाधनों के बेहतर प्रबंधन को बढ़ावा देना है। तेजी से बदलते जलवायु परिदृश्य को देखते हुए इन योजनाओं को दीर्घकालिक निवेश के रूप में देखा जा रहा है। तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में राज्य ने 'हरियाणा एआई मिशन' की घोषणा कर डिजिटल भविष्य की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। इस मिशन के लिए 474 करोड़ रुपये की स्वीकृति का प्रस्ताव रखा गया है। सरकार का मानना है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित समाधान प्रशासनिक दक्षता बढ़ाने, स्टार्टअप संस्कृति को प्रोत्साहित करने और युवाओं के लिए नई रोजगार संभावनाएं सृजित करने में सहायक होंगे। साथ ही 'सक्षम' नाम से 500 करोड़ रुपये की प्रारंभिक राशि से एक विशेष फंड स्थापित करने का प्रस्ताव है, जो नवाचार और औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन देगा। ब्लॉक आधारित पुरानी लोकेशन वर्गीकरण व्यवस्था को समाप्त कर नई नीति लागू करने की घोषणा भी की गई है, ताकि राज्य के सभी क्षेत्रों में समान रूप से औद्योगिक निवेश आकर्षित किया जा सके।

कृषि क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने के लिए सरकार ने फसल विविधीकरण पर जोर दिया है। जो किसान धान की जगह तिलहन या कपास जैसी वैकल्पिक फसलें उगाएंगे, उन्हें 2000 रुपये प्रति एकड़ अतिरिक्त बोनस दिया जाएगा। गन्ना प्रौद्योगिकी मिशन के तहत किसानों को दी जा रही 3000 रुपये प्रति एकड़ की प्रोत्साहन राशि को बढ़ाकर 5000 रुपये प्रति एकड़ करने का प्रस्ताव है। मुख्यमंत्री बागवानी बीमा योजना के अंतर्गत मुआवजे की राशि 40,000 रुपये प्रति एकड़ से बढ़ाकर 50,000 रुपये प्रति एकड़ करने की घोषणा की गई है।

350 वर्षों की आस्था और अग्नि का महापर्व: नाथद्वारा में जलेगी विश्व की सबसे ऊंची होलिका

जीएनएस)। राजस्थान के राजसमंद जिले स्थित पावन धाम नाथद्वारा एक बार फिर अद्भुत आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा का साक्षी बनने जा रहा है। यहां विश्व की सबसे बड़ी होलिका दहन की परंपरा सदियों से निभाई जा रही है। इस वर्ष भी लगभग 30 से 32 फीट ऊंची होलिका तैयार की जा रही है, जिसे देखने और इस दिव्य आयोजन का साक्षी बनने के लिए देशभर से श्रद्धालु पहुंचते हैं। यह आयोजन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि 350 वर्षों से चली आ रही जीवंत परंपरा का प्रतीक है, जो आज भी उतनी ही श्रद्धा और उत्साह के साथ निभाई जाती है।

नाथद्वारा में स्थित होलीमंगरा क्षेत्र में विशाल होलिका का निर्माण कार्य कई दिन पहले ही प्रारंभ हो जाता है। इसे तैयार करने के लिए बड़ी संख्या में श्रमिक जुटते हैं। लगभग 1500 से 2000 तक कांटों की झाड़ियां, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'मथारियां' कहा जाता है, एकत्र की जाती हैं। इन मथारियों को सावधानीपूर्वक व्यवस्थित कर लगभग 32 फीट ऊंची संरचना बनाई जाती है। यह दृश्य अपने आप में अद्वितीय होता है, जब श्रमिकों की टोली परंपरा के अनुसार इस विराट होलिका को आकार देती है।

इस आयोजन का सीधा संबंध श्रीनाथजी मंदिर, नाथद्वारा की परंपराओं से जुड़ा हुआ है। मंदिर के पंड्याजी परेश नागर के अनुसार, जब प्रभु श्रीजी ब्रज से नाथद्वारा पधारे, तभी से यह परंपरा निरंतर जारी है। लगभग साढ़े तीन सौ वर्षों से यहां होली केवल एक-दो दिन का पर्व नहीं, बल्कि पूरे 40 दिनों तक चलने वाला उत्सव है। इन चालीस दिनों में प्रतिदिन विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें श्रद्धालु बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

नाथद्वारा में होलिका दहन केवल एक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भविष्य संकेतों से भी जुड़ा हुआ माना जाता है। पंड्याजी के अनुसार, होलिका दहन के समय उठने वाली अग्नि की लपटों की दिशा और तीव्रता को आने वाले वर्ष के संकेत के रूप में देखा जाता है। यदि लपटें हवा के साथ गांव की ओर झुकती हैं तो इसे आगामी समय में कठिनाइयों और बीमारियों की संभावना के रूप में माना जाता है। वहीं यदि लपटें सीधी ऊपर उठती हैं या अनुकूल दिशा में जाती हैं तो यह वर्ष को सुखद और समृद्ध मानने का संकेत समझा जाता है। यह मान्यता सदियों से चली आ रही है और आज भी श्रद्धालु इसे गंभीरता से लेते हैं।

इस वर्ष ग्रहण के कारण होलिका दहन का समय विशेष रूप से निर्धारित किया गया है। जानकारी के अनुसार, 3 मार्च को प्रातः 6 बजे होलिका दहन किया जाएगा। यह समय परंपरा और ज्योतिषीय गणना के आधार पर तय किया गया है। प्रातःकालीन वातावरण में जब 32 फीट ऊंची होलिका अग्नि में परिवर्तित होती है, तो उसका दृश्य अत्यंत भव्य और आध्यात्मिक अनुभूति से भर देता है।

दूर-दराज से आने वाले श्रद्धालु इस अवसर पर अपने परिवार की सुख-शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना करते हैं। कई परिवार पीढ़ियों से इस परंपरा का हिस्सा बनते आए हैं। होलिका दहन के समय वातावरण में भक्ति, आस्था और उल्लास का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। ढोल-नगाड़ों की गूंज, जयघोष और श्रद्धालुओं की भीड़ इस आयोजन को और भी दिव्य बना देती है।

नाथद्वारा की होली का महत्व केवल विशाल होलिका तक सीमित नहीं है। यहां 40 दिनों तक चलने वाला उत्सव सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। इन दिनों में लोग एक-दूसरे से मिलते हैं, अबीर-गुलाल लगाते हैं और आपसी प्रेम व सद्भाव का संदेश देते हैं। मंदिर परिसर और नगर की गलियां रंगों और भक्ति संगीत से सराबोर रहती हैं।

इतिहासकारों के अनुसार, जब श्रीनाथजी की प्रतिमा ब्रज से यहां स्थापित हुई, तब से ब्रज की होली परंपरा भी नाथद्वारा में जीवंत हो उठी। यही कारण है कि यहां की होली में ब्रज की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। भक्ति और उत्सव का यह संगम नाथद्वारा को अन्य स्थानों से विशिष्ट बनाता है।

विश्व की सबसे बड़ी होलिका का दावा करने वाला यह आयोजन न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। देश-विदेश से पर्यटक इस अद्वितीय परंपरा को देखने पहुंचते हैं। प्रशासन और मंदिर ट्रस्ट द्वारा सुरक्षा और व्यवस्थाओं का विशेष ध्यान रखा जाता है, ताकि श्रद्धालु सुरक्षित और सुव्यवस्थित ढंग से इस आयोजन का हिस्सा बन सकें।

हर वर्ष की तरह इस बार भी नाथद्वारा में होलिका दहन को लेकर उत्साह चरम पर है। विशाल होलिका की तैयारी अंतिम चरण में है और श्रद्धालु उस पावन क्षण की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब अग्नि प्रज्वलित होगी और आकाश तक उठती लपटें एक बार फिर सदियों पुरानी आस्था की गवाही देंगी।

सुप्रीम कोर्ट की आलोचना के बीच सीबीआई और ईडी की विश्वसनीयता पर सवाल उठ रहे हैं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। देश के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सीबीआई, ईडी, आईटी आदि जैसी जांच एजेंसियों की बार-बार की गई आलोचना इन संस्थानों के लिए सचमुच डूबते पानी जैसी स्थिति है। लेकिन पता नहीं क्यों ये शीर्ष एजेंसियां सुधार का नाम नहीं ले रही हैं। यह उनके प्रदर्शन में सुधार की बजाय उसे बिगाड़ने का एक और उदाहरण है। आम आदमी पार्टी के सुप्रीमो और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनके वरिष्ठ नेताओं को आबकारी मामले में जिस तरह बरी किया गया है, उसे देखकर जांच एजेंसियां संदेह के घेरे में आ गई हैं।

शून्य त्रुटि एजेंसी

इस मामले ने देश की राजनीति में हलचल मचा दी थी। इस मामले में आम आदमी पार्टी को भारी नुकसान हुआ और दिल्ली में सत्ता भी गंवानी पड़ी। केजरीवाल, मनोज सिसोदिया जैसे वरिष्ठ नेताओं को जेल भी जाना पड़ा। इसके बाद स्वाभाविक रूप से सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के कामकाज की कड़ी आलोचना हुई। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के कामकाज और जांच पद्धति पर पहले भी सवाल उठ चुके हैं। इन एजेंसियों की छवि को लेकर भी चिंताएं जताई गई हैं। हालांकि, दिल्ली शराब नीति घोटाले में विशेष अदालत के फैसले ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या ये एजेंसियां जानबूझकर नेताओं और अन्य व्यक्तियों के खिलाफ मामले दर्ज कर रही हैं? और क्या इनका दुरुपयोग हो रहा है?

लेकिन हैरानी की बात यह है कि विपक्षी दलों और अदालतों द्वारा बार-बार सवाल उठाए जाने के बावजूद, ईडी और सीबीआई के कामकाज के तरीकों में कोई बदलाव नहीं आया है। ईडी द्वारा दर्ज किए गए सभी मामलों में दोषसिद्धि दर बहुत कम है और यह जानना जरूरी है कि ऐसा क्यों है। क्या यह चिंता का विषय नहीं होना चाहिए कि इन एजेंसियों की विश्वसनीयता पर केवल उनके काम करने के तरीके के कारण सवाल उठ रहे हैं? क्या किसी वास्तविक मामले में उनकी विश्वसनीयता दांव पर नहीं लगेगी? इस प्रकार, जनता को यह धारणा बन रही है कि जांच एजेंसियां किसी के आदेश पर काम करने वाली कठपुतली बन गई हैं।

मोहित द्विवेदी ने उत्तर प्रदेश के हमीरपुर में 25 बैलगाड़ियों की बलि देने की पारंपरिक रस्म के साथ शादी की

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

आज के आधुनिक युग में, शादी करने वाले लोग अपनी-अपनी परिस्थितियों के अनुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अखबारों में विशेष हेलीकॉप्टरों और यहां तक कि विमानों में जान गंवाने वाले लोगों की खबरें भी छपी हैं। इसलिए आज, इस आधुनिक युग में भी, कुछ ऐसे दुर्लभ मामले सामने आते हैं जो प्राचीन परंपराओं की तरह पुरानी यादों को ताजा कर देते हैं। ऐसा ही एक मामला उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले के गुडा गांव का है। इसी गुडा गांव के निवासी मोहित धिवेदी ने बैलगाड़ी में बैठकर जीवन व्यतीत करने की पुरानी परंपरा का पालन करते हुए जलालपुर गांव की मोहिनी पाठक से शादी करने जा रहे थे।

शून्य त्रुटि एजेंसी

इसलिए दूल्हा-दुल्हन ने आधुनिकीकरण के कारण 50 वर्षों से बंद पड़ी परंपरा को पुनर्जीवित करने का निर्णय लिया। गांव के लोगों ने भी उनका साथ दिया। मोहित ने आसपास के गांवों से पच्चीस बैलगाड़ियां मंगवाईं और उन्हें सादगी से सजाकर दूल्हे के दोस्तों को उनमें बिठाकर दुल्हन के विवाह स्थल पर पहुंचे। पच्चीस बैलगाड़ियों की यह यात्रा लगभग 3 किलोमीटर लंबी थी। गांव में तीन दिनों तक एक साधारण विवाह समारोह चला और फिर दुल्हन को उन्हीं बैलगाड़ियों में विदा किया गया। विवाह हॉल में डीजे की बजाय, दुल्हन ने बाघों और महिलाओं द्वारा गाए गए पारंपरिक बुंदेलखंडी गीतों का आनंद लेते हुए घर वापसी की।

शशिकांत सोलंकी का सूरत में निधन हो गया, अंतिम संस्कार 6 मार्च को होगा

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत जिला हरिजन सेवा मंडल के उपाध्यक्ष, गुजरात प्रदेश नगर निगम कर्मचारी कांग्रेस के उपाध्यक्ष और सेवाभाई वाल्मीकि समाज के नेता अमृतभाई सोलंकी के पुत्र शशिकांत सोलंकी का 28 फरवरी 2026 को दुखद निधन हो गया। शशिकांत सोलंकी सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक थे और निर्माण क्षेत्र में अच्छा काम कर रहे थे। वे 9 फरवरी 2026 से पीलिया से पीड़ित थे। उनके पिता अमृतभाई सोलंकी का सूरत शहर के प्रमुख अस्पतालों में इलाज चल रहा था, लेकिन शशिकांत को बचाया नहीं जा सका। शशिकांत सोलंकी का अंतिम संस्कार 3 जून 2026 को शाम 4 बजे ओराना मुखम में किया गया।

शून्य त्रुटि एजेंसी

गुजरात प्रदेश नगर निगम कर्मचारी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष भाई लाल बी. वैष्णव, सूरत मेडिकल कॉलेज के निवारक एवं सामाजिक चिकित्सा विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. एस.एल. कंथारिया, गुजरात प्रदेश वाल्मीकि समाज के कार्यकारी अध्यक्ष शशिकांत सोलंकी, उपाध्यक्ष सतीशभाई सोलंकी, अधिवक्ता अश्विन बी. वैष्णव, हितेशभाई वाघेला भाड़ा और अन्य लोगों ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की और प्रार्थना की कि सर्वशक्तिमान ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार को इस विपत्ति को सहने की शक्ति दें।

गरवी गुजरात
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2002

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
गरवी गुजरात हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

बढ़ेंगी हमारी मुश्किलें

'समरथ को नहिं दोष गुसाईं'—यह उक्ति उस कठोर यथार्थ को प्रकट करती है जिसमें शक्ति ही न्याय का निर्धारण करने लगती है। जब शक्ति नैतिकता और कानून से ऊपर स्थापित हो जाती है, तब वैश्विक व्यवस्था का संतुलन बिगड़ने लगता है। हाल के वर्षों में पश्चिम एशिया में उत्पन्न तनाव, विशेष रूप से ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ते टकराव तथा उसमें इज़राइल की सक्रिय भूमिका ने अंतरराष्ट्रीय कानून, संप्रभुता और वैश्विक न्याय व्यवस्था पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगा दिए हैं। किसी भी संप्रभु राष्ट्र के राजनीतिक नेतृत्व या उसकी आंतरिक संरचना पर बाहरी सैन्य हस्तक्षेप केवल उस देश की स्वतंत्रता पर हमला नहीं होता, बल्कि यह पूरी वैश्विक व्यवस्था के लिए खतरनाक संकेत होता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व समुदाय ने यह संकल्प लिया था कि भविष्य में किसी भी राष्ट्र की संप्रभुता का उल्लंघन नहीं होने दिया जाएगा। इसी उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना की गई थी, ताकि वैश्विक विवादों का समाधान संवाद और कूटनीति के माध्यम से किया जा सके। लेकिन हाल के घटनाक्रमों ने यह दिखाया है कि शक्तिशाली राष्ट्र इन संस्थाओं की सीमाओं को दरकिनार कर अपने रणनीतिक और राजनीतिक हितों के अनुसार कार्रवाई कर रहे हैं। इससे यह संदेश जा रहा है कि अंतरराष्ट्रीय कानून केवल कमजोर देशों के लिए बाध्यकारी है, जबकि शक्तिशाली राष्ट्र अपने हितों के अनुसार नियमों की व्याख्या कर सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों में दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में इस प्रकार की घटनाएं सामने आई हैं, जिन्होंने वैश्विक अस्थिरता को बढ़ाया है। रूस द्वारा यूक्रेन पर किया गया सैन्य आक्रमण, वेनेजुएला में राजनीतिक हस्तक्षेप, तथा एशिया में ताइवान को लेकर बढ़ता तनाव इस बात के संकेत हैं कि दुनिया एक बार फिर शक्ति-आधारित वैश्विक व्यवस्था की ओर बढ़ रही है। इस प्रकार की घटनाएं यह दर्शाती हैं कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता और कानून की बजाय सैन्य शक्ति, आर्थिक दबाव और रणनीतिक हित अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं।

अमेरिका की विदेश नीति इस संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका ने 'अमेरिका फर्स्ट' की नीति को अपनाया, जिसका मुख्य उद्देश्य अमेरिकी हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देना था। इस नीति के तहत अमेरिका ने कई देशों पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए, व्यापारिक टैरिफ बढ़ाए और अपने रणनीतिक हितों की रक्षा के लिए आक्रामक कदम उठाए। इससे वैश्विक व्यापार और आर्थिक संतुलन प्रभावित हुआ। कई देशों की अर्थव्यवस्था पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा, जिससे वैश्विक आर्थिक अस्थिरता बढ़ी। ईरान पर हुए हमले का सबसे बड़ा प्रभाव वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा पर पड़ सकता है। विश्व के तेल आपूर्ति मार्गों में होर्मुज जलडमरूमध्य का विशेष महत्व है। यह मार्ग विश्व के सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा गलियारों में से एक है, जहां से बड़ी मात्रा में कच्चे तेल का परिवहन होता है। यदि इस क्षेत्र में सैन्य तनाव बढ़ता है या आपूर्ति बाधित होती है, तो इसका सीधा असर वैश्विक तेल बाजार पर पड़ेगा। तेल की कीमतों में वृद्धि से न केवल ऊर्जा संकट उत्पन्न होगा, बल्कि इससे वैश्विक महंगाई भी बढ़ेगी और आर्थिक विकास प्रभावित होगा। इस पूरे घटनाक्रम का भारत पर भी व्यापक प्रभाव पड़ने की संभावना है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा करता है, जिसमें मध्यपूर्व की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि ईरान और अमेरिका के बीच संघर्ष बढ़ता है, तो भारत के लिए ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करना कठिन हो सकता है। इससे पेट्रोल और डीजल की कीमतों में वृद्धि होगी, जिसका प्रभाव परिवहन, उद्योग और आम नागरिकों के जीवन पर पड़ेगा। महंगाई बढ़ने से आर्थिक विकास की गति धीमी हो सकती है। इसके अतिरिक्त मध्यपूर्व में बड़ी संख्या में भारतीय काम करते हैं। इन प्रवासी भारतीयों द्वारा भेजी जाने वाली विदेशी मुद्रा भारत की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। यदि इस क्षेत्र में अस्थिरता बढ़ती है, तो इन भारतीयों के रोजगार और सुरक्षा पर खतरा उत्पन्न हो सकता है। इससे भारत की विदेशी मुद्रा आय प्रभावित होगी और आर्थिक संतुलन पर दबाव बढ़ेगा।

भारत की विदेश नीति के सामने भी एक जटिल चुनौती उत्पन्न हो गई है। एक ओर भारत के अमेरिका और इज़राइल के साथ मजबूत रणनीतिक, रक्षा और आर्थिक संबंध हैं, वहीं दूसरी ओर ईरान के साथ भारत के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध भी महत्वपूर्ण हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने बहुध्रुवीय और संतुलित विदेश नीति अपनाने का प्रयास किया है, जिसमें सभी प्रमुख शक्तियों के साथ सहयोग बनाए रखा गया है।

ईरान पर हमले से बढ़ेगा मध्यपूर्व का संकट

> "ओमान को भी लगा है कि बातचीत के धोखे में ईरान के सर्वोच्च नेता अली ख़ामेनेई, उनके परिवार और दूसरे टॉप ईरानी अधिकारियों की हत्या सीआईए और मोसाद के बीच इंटेलिजेंस शेयरिंग के बाद हुई। अली ख़ामेनेई की सत्ता पलटी जा सकती थी, उन्हें मारना ट्रंप-नेतन्याहू की 'कूटनीतिक मिसफायर' है। वो सद्दाम हुसैन नहीं थे।

शनिवार को हुए हमलों में कम से दो सौ से अधिक लोग मारे गए हैं, जिनमें दक्षिणी ईरान के एक स्कूल में हुए 80 से ज़्यादा लोग शामिल हैं। अमेरिका में इस हमले के हवाले से जो पोल कराया गया, उससे स्पष्ट हुआ कि केवल 33 फीसद लोग ईरान पर आक्रमण के पक्ष में थे। डेमोक्रेटिक हाउस माइनॉरिटी लीडर हकीम जेफ्रीस ने कहा, 'डोनाल्ड ट्रंप ईरान पर हमला करने से पहले कांग्रेस से मंज़ूरी लेने में नाकाम रहे थे।' ट्रंप को कन्विंस करना होगा कि ईरान पर कार्रवाई के बाद अमेरिकन्स सुरक्षित हैं।

चीनी विदेश मंत्रालय मिडल ईस्ट में फंसे अपने नागरिकों को वहां से निकल लेने के कई विकल्प दे चुका है। मंत्रालय ने कहा कि अस्तारा बॉर्डर क्रॉसिंग के ज़रिए अज़रबैजान में हमारे नागरिक बिना वीज़ा के आ सकते हैं, जो रोज़ सुबह 9:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक खुला रहता है। अगराक क्रॉसिंग से आर्मेनिया में भी बिना वीज़ा के एंट्री मिलती है। चीनी दूतावास के मुताबिक, 'वान, आगरी और हक्कारी प्रांतों में बॉर्डर क्रॉसिंग के ज़रिए तुर्की में ज़मीन के रास्ते खुले हैं, जहां चीनी पासपोर्ट होल्डर्स को भी बिना वीज़ा के आने-जाने की इजाज़त है। जो लोग इराक में घुसना चाहते हैं, वे शालमचेह बॉर्डर क्रॉसिंग के ज़रिए ऐसा कर सकते हैं, बशर्ते वे पहले से इलेक्ट्रॉनिक वीज़ा ले लें, या पहुंचने पर टेम्पररी वीज़ा के लिए अप्लाई करें।'

मिडिल ईस्ट में कई एम्बेसी, जिनमें तुर्की, अज़रबैजान और इराक शामिल हैं, ने उन चीनी नागरिकों के लिए अधिसूचना जारी की हैं, जो ईरान से इन देशों में इवैक्युएट होना चाहते हैं। इससे एक बात तो नज़र आ रही है, कि मिडल-ईस्ट में

लड़ाई लम्बी चलेगी। उसमें चीन और रूस की भूमिका अभी स्पष्ट नहीं है। इनकी पहली प्राथमिकता अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने की रहेगी। युद्ध प्रभावित और ईरानी टारगेट वाले देशों में कोई 50 हज़ार रूसी नागरिक हैं। क़तर और बहरीन में कोई दो हज़ार रूसी नागरिकों को निकलने की चिंता क्रेमलिन को है। लेकिन चीन-रूस से कई गुना अधिक 97 लाख के क़रीब भारतीय नागरिक युद्ध प्रभावित गल्फ के देशों में हैं, उन्हें सुरक्षित निकालना आसान नहीं है।

इराकी कुर्दिस्तान के एरबिल में हवाई हमले और धमाकों की खबर है। शिया मिलिशिया शरया उलिया अल-दाम ने उस जगह पर कब्ज़ा करने का दावा किया, जहां एक बड़ी फ्यूल स्टोरेज की जगह थी। मूवमेंट के मिलिट्री विंग के प्रतिनिधियों ने घोषणा की, कि इराक में अमेरिकी सैनिकों, प्रॉपर्टी और इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमले जारी रहेंगे। कतर, कुवैत, बहरीन, जॉर्डन और यूएई अमेरिकी मित्र और सैन्य ठिकानों वाले देश हैं। ईरानी ऑपरेशन में मरने वाले अमेरिकी सैनिकों की संख्या कथित तौर पर बढ़ गई है। कुवैत में एक बेस और बहरीन में अमेरिकी सैनिकों के ठिकानों पर ईरानी रेवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प के हमलों में सबसे ज़्यादा अमेरिकी सैनिक मारे गए।

एक बात तो मान कर चलें, जिन-जिन देशों में अमेरिकी बेस हैं, वो मुल्क़ भी महफूज़ नहीं हैं। राजधानी दोहा के बाहर रेगिस्तान में 24 हेक्टेयर का अल उदीद एयर बेस, यूएस सेंट्रल कमांड का फॉरवर्ड हेडक्वार्टर है, जो पश्चिम में मिस्र से लेकर पूर्व में कजाकिस्तान तक फैले इलाके में अमेरिकी मिलिट्री ऑपरेशन्स को डायरेक्ट करता है। मिडिल ईस्ट के सबसे बड़े अल उदीद बेस में करीब 10,000 अमेरिकी सैनिक हैं। इसके अलावा कैंप आरिफजान में अमेरिकी सैनिकों का जमावड़ा है।

अमेरिकन आर्मी सेंट्रल का फॉरवर्ड हेडक्वार्टर, अली अल सलेम एयर बेस को माना जाता है, जो इराकी बॉर्डर से लगभग 40 किलोमीटर दूर है, और अपने ऊबड़-खाबड़ माहौल की वजह से 'द रॉक' के नाम से जाना जाता है। यूएस आर्मी की वेबसाइट के मुताबिक, कैंप ब्यूहरिंग 2003 के इराक युद्ध के दौरान बनाया गया था, और यह इराक और सीरिया में तैनात अमेरिकी आर्मी यूनिट्स के लिए एक स्टेजिंग पोस्ट है। अबू धाबी के दक्षिण में मौजूद अल धाफरा एयर बेस, अमेरिकी एयर फोर्स का एक अहम हब है। दुबई का जेबेल अली पोर्ट, मिडिल ईस्ट में यूएस नेवी का सबसे बड़ा पोर्ट ऑफ़ कॉल है, जहां नियमित रूप से अमेरिकी युद्धक विमान और दूसरे जहाज़ आते-जाते रहते हैं।

व्हाइट हाउस के मुताबिक, 'अमेरिका, इराक के पश्चिमी अनबर प्रांत में ऐन अल असद एयर बेस पर अपनी उपस्थिति बनाए रखता है, जो इराकी सुरक्षा बलों को सपोर्ट करता है और नाटो मिशन में योगदान देता है।' 2020 में ईरानी मिसाइल हमलों में इस बेस को निशाना बनाया गया था। उत्तरी इराक के सेमी-ऑटोनॉमस कुर्दिस्तान इलाके में मौजूद, एरबिल एयर बेस अमेरिकी और मित्र सेनाओं के लिए ट्रेनिंग, एक्सरसाइज़ और बैटल ड्रिल करने के लिए एक हब के तौर पर काम करता है। यूएस कांग्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, 'यह बेस उत्तरी इराक में ट्रेनिंग, इंटेलिजेंस शेयरिंग और लॉजिस्टिक कोऑर्डिनेशन में अहम भूमिका अदा करता है।'

सऊदी अरब के रियाद से लगभग 60 किलोमीटर दक्षिण में, प्रिंस सुल्तान एयर बेस पैट्रियट मिसाइल बैटरी और टर्मिनल हाई एल्टीट्यूड एरिया डिफेंस सिस्टम सहित यूएस आर्मी के एसेट्स को सपोर्ट करता है। जॉर्डन की राजधानी अम्मान से 100 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में अज़राक में, मुवफ़्फ़क अल साल्टी एयर बेस अमेरिकी एयर फ़ोर्स सेंट्रल के 332वें एयर एक्सपेडिशनरी विंग को होस्ट करता है, जो लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस की 2024 की एक रिपोर्ट के अनुसार, 'यह अमेरिकी सैन्य ठिकाना, 'लेवेंट मिशन' में शामिल है।'

इस हमले ने मिडल ईस्ट में मुस्लिम एकता को बांट रखा है। मिडल ईस्ट में अमेरिकी मित्र राष्ट्र एकजुट हैं, जिन्हें सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान समन्वित कर रहे हैं। प्रिंस सलमान ट्रंप के लगातार संपर्क में हैं। क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान और सीरिया के प्रेसिडेंट अहमद अल-शरा ने इलाके में चल रही मिलिट्री बढ़ोतरी पर चर्चा की। क्राउन प्रिंस के पास ओमान के सुल्तान हैथम बिन तारिक और लेबनान के राष्ट्रपति जोसेफ औन से भी अलग-अलग कॉल आए, जिसमें किंगडम और दूसरे खाड़ी देशों को टारगेट करने पर चर्चा हुई। गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल में अब तक सिर्फ़ ओमान ही ऐसा देश है, जिस पर ईरान ने हमला नहीं किया है।

ओमान ने कई सालों तक ईरान और दूसरे देशों के बीच संपर्क का काम किया है। जिनेवा में ईरान और अमेरिका के बीच हुई बातचीत में ओमान ने अहम भूमिका निभाई थी। लेकिन, ओमान को भी लगा है कि बातचीत के धोखे में ईरान के सर्वोच्च नेता अली ख़ामेनेई, उनके परिवार और दूसरे टॉप ईरानी अधिकारियों की हत्या सीआईए और मोसाद के बीच इंटेलिजेंस शेयरिंग के बाद हुई। अली ख़ामेनेई की सत्ता पलटी जा सकती थी, उन्हें मारना ट्रंप-नेतन्याहू की 'कूटनीतिक मिसफायर' है। वो सद्दाम हुसैन नहीं थे।

प्रेरणा

सद्बुद्धि ही सच्ची संपत्ति का आधार

भारतीय संत परंपरा में ज्ञान को धन से कहीं अधिक महत्व दिया गया है। जब किसी ने महान संत और कवि गोस्वामी तुलसीदास से यह प्रश्न किया कि सम्पूर्ण रामायण का सार क्या है, तो उन्होंने बड़ी सहजता से उत्तर दिया—"जहां सुमति तह सम्पत्ति नाना, जहां कुमति विपत्ति जाना।" इस एक चौपाई में जीवन, समाज और राज्य व्यवस्था का गहन दर्शन समाहित है। इसका आशय स्पष्ट है कि जहां सद्बुद्धि, विवेक और धर्मसम्मत विचारों का वास होता है, वहां विविध प्रकार की संपत्तियां—चाहे वे भौतिक हों या आध्यात्मिक—स्वतः विकसित होती हैं। और जहां कुविचार, अहंकार और अन्याय का वर्चस्व होता है, वहां विपत्ति, क्लेश और विनाश अवश्य आते हैं।

सुमति केवल बुद्धिमत्ता नहीं है। यह मन की पवित्रता, विचारों की शुद्धता और आचरण की मर्यादा का सम्मिलित स्वरूप है। सुमति व्यक्ति को संयम सिखाती है, उसे धर्म का मार्ग दिखाती है और उसे परिस्थितियों के दबाव में भी सही निर्णय लेने की क्षमता देती है। इसके विपरीत कुमति व्यक्ति को भ्रमित करती है, उसे लोभ, क्रोध और मोह के जाल में फंसा देती है। यही कारण है कि सुमति जीवन को जोड़ती है और कुमति जीवन को तोड़ती है।

इस सत्य का सबसे सुंदर उदाहरण अयोध्या के रूप में देखा जा सकता है। अयोध्या केवल एक भौगोलिक नगर नहीं थी, बल्कि वह आदर्शों और मर्यादाओं का प्रतीक थी। वहां के राजकुमार भगवान राम के व्यक्तित्व में सुमति का सर्वोच्च रूप दिखाई देता है। भाई-भाई में अपार प्रेम था। पिता और पुत्र के संबंध में त्याग और सम्मान था। राजा और प्रजा के बीच विश्वास और आत्मीयता थी। परिवार के भीतर भी मर्यादा और स्नेह का वातावरण था। यही सुमति थी, जिसने अयोध्या को एक आदर्श राज्य बनाया। जब परिस्थितियों ने करवट ली और राम को वनवास जाना पड़ा, तब भी अयोध्या के लोगों के हृदय में धर्म और सत्य के प्रति आस्था बनी रही। संकट के बाद भी अयोध्या का पुनः बसना यह दर्शाता है कि सुमति अंततः समृद्धि को वापस ले आती है।

इसके विपरीत लंका का इतिहास कुमति के परिणामों को उजागर करता है। लंका सोने की नगरी कही जाती थी। वहां अपार वैभव, शक्ति और संसाधन थे। लेकिन वहां के शासन में अहंकार और अन्याय ने स्थान बना लिया था। सत्य को दबाया गया और धर्म की अवहेलना की गई। एक भाई को अपमानित कर राज्य से निकाल दिया गया। यह कुमति का स्पष्ट उदाहरण था। परिणाम यह हुआ कि अपार संपत्ति के बावजूद लंका का विनाश हो गया। उसका वैभव धूल में मिल गया। यह घटना सिखाती है कि केवल धन और भौतिक समृद्धि किसी राष्ट्र या व्यक्ति को स्थायी सुख नहीं दे सकती। यदि विवेक और नैतिकता का अभाव है, तो समृद्धि टिक नहीं सकती।

महाभारत का प्रसंग भी सुमति और कुमति के अंतर को स्पष्ट करता है। पाण्डव संख्या में कम थे, संसाधनों में कमजोर थे और उन्हें जीवन में अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा। उन्हें वनवास मिला, अपमान सहना पड़ा और कठिन संघर्षों से गुजरना पड़ा। लेकिन उनके पास सुमति थी। वे धर्म, सत्य और न्याय के मार्ग पर अडिग रहे। उन्होंने परिस्थितियों के आगे झुकने के बजाय धैर्य और संयम को अपनाया। यही सुमति अंततः उनकी विजय का कारण बनी।

दूसरी ओर कौरव के पास सब कुछ था—राज्य, सेना और शक्ति। लेकिन उनके विचारों में ईर्ष्या, अहंकार और अधर्म का स्थान था। उन्होंने अन्याय को अपनाया और सत्य की अनदेखी की। परिणाम यह हुआ कि अंततः महायुद्ध में उनकी पराजय हुई और उनका वंश समाप्त हो गया। जबकि पाण्डवों ने अंततः हस्तिनापुर पर शासन किया। यह प्रसंग यह सिद्ध करता है कि सुमति विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति को विजय की ओर ले जाती है और कुमति समृद्धि के बीच भी विनाश का कारण बनती है।

यह सिद्धांत केवल प्राचीन ग्रंथों तक सीमित नहीं है। आज के युग में भी यह उतना ही प्रासंगिक है। किसी भी समाज की उन्नति केवल तकनीकी विकास या आर्थिक संसाधनों पर निर्भर नहीं करती। यदि समाज के लोगों में परस्पर विश्वास, नैतिकता और विवेक नहीं है, तो विकास स्थायी नहीं रह सकता। परिवारों में भी यही सत्य लागू होता है। जहां आपसी सम्मान और समझदारी होती है, वहां सुख और शांति बनी रहती है। जहां संकीर्णता और अहंकार होता है, वहां कलह और अशांति जन्म लेती है।

सुमति व्यक्ति को संतुलन सिखाती है। यह उसे सिखाती है कि सफलता मिलने पर अहंकार न करे और असफलता मिलने पर निराश न हो। यह उसे दूसरों के प्रति करुणा और सहानुभूति का भाव रखने की प्रेरणा देती है। सुमति ही वह आधार है, जिस पर सच्ची समृद्धि का भवन खड़ा होता है। यदि नींव मजबूत है, तो भवन भी स्थायी रहेगा। यदि नींव कमजोर है, तो बाहरी चमक-दमक भी उसे गिरने से नहीं बचा सकती। कुमति व्यक्ति को क्षणिक लाभ की ओर आकर्षित करती है, लेकिन दीर्घकालीन हानि का कारण बनती है। यह व्यक्ति को स्वार्थी बनाती है और उसे संबंधों की कीमत भूलने पर मजबूर करती है। इसके विपरीत सुमति त्याग और सहयोग का मार्ग दिखाती है। यह व्यक्ति को जोड़ने का कार्य करती है, जबकि कुमति विभाजन का कारण बनती है।

अंततः यह स्पष्ट है कि जीवन में सच्ची समृद्धि पाने के लिए धन से अधिक आवश्यक है सद्बुद्धि। यदि हमारे विचार शुद्ध हैं, हमारे कर्म धर्मसम्मत हैं और हमारा व्यवहार मर्यादित है, तो समृद्धि अपने आप हमारे जीवन में प्रवेश करती है। विपत्तियां भी तब हमें तोड़ नहीं पातीं, बल्कि हमें और मजबूत बना देती हैं। यही कारण है कि संतों ने सदैव सुमति को जीवन का सर्वोच्च धन बताया है। सुमति ही वह दीपक है, जो अंधकार में मार्ग दिखाता है। और जब मार्ग स्पष्ट हो, तो मंजिल दूर नहीं रहती।

विकसित छत्तीसगढ़ का स्वप्न, भाजपा सरकार गठन का तीसरा साल

छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार गठन के तीसरे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विधानसभा चुनाव 2023 में जनता ने हम पर जो भरोसा जताया, उसे पूरा करने के लिए हमने जिस राजनीतिक प्रतिबद्धता के साथ कार्य किया, उससे प्रदेश के प्रत्येक नागरिक के जीवन स्तर में बदलाव देखा जा सकता है। गरीब, किसान, महिलाएं, जनजातीय समाज का कल्याण सर्वोच्च प्राथमिकता में है। हमने सरकार बनने के दूसरे ही दिन कैबिनेट की बैठक में 'मोदी की गारंटी' के अनुरूप 18 लाख से अधिक जरूरतमंद परिवारों को प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति का निर्णय लिया। पीएम आवास से जुड़ी फाइल को जब हमारी कैबिनेट स्वीकृति दे रही थी, वह पल मेरे लिए अत्यंत भावुकता से भरा था। हम अंत्योदय के जिस विचार को लेकर आगे बढ़ते हैं, उसे साकार होते देखना प्रेरणादायी है। छत्तीसगढ़ देश की इकोनमी का इंजन है। बावजूद इसके माओवाद ने हमारी विकास यात्रा को काफी बाधित किया था। अब हम इसको जड़ से उखाड़ फेंकने के करीब हैं।

ऊर्जा आत्मनिर्भरता : प्रधानमंत्री के ऊर्जा आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को पूरा करने में छत्तीसगढ़ की अहम भूमिका है। अभी हमारा राज्य विद्युत उत्पादन में देश में दूसरे स्थान पर है, जबकि वर्ष 2030 तक हम पहले स्थान पर आ जाएंगे। हमारे राज्य की कुल भूमि का 44 प्रतिशत वन क्षेत्र है, जो हमें फारेस्ट इकोनमी के असीमित अवसर प्रदान करता है। राज्य निर्माण के समय हमारी अर्थव्यवस्था का हिस्सा खनन उद्योग में ही केंद्रित था, लेकिन अब हम खाद्य प्रसंस्करण से लेकर सेवा और आइटी जैसे नए क्षेत्रों को प्रोत्साहित कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ पहला राज्य है, जहां लिथियम ब्लाक की सफलतापूर्वक नीलामी की गई है। सेमीकंडक्टर कारखाना और एआइ डाटा सेंटर पार्क ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के प्रवेश द्वार बनेंगे।

नई औद्योगिक नीति के जरिए इंडस्ट्री फ्रेंडली नीतियां लेकर आए हैं। अब राज्य में उद्योग लगाने वाले लोगों को सरकारी विभागों से मंजूरी के लिए चक्कर काटने की जरूरत नहीं है, सिंगल विंडो सिस्टम 2.0 के जरिये सभी आवश्यक मंजूरी एक क्लिक पर मिल रही है। राज्य सरकार युवाओं को पारदर्शी, समयबद्ध और नियमित भर्ती प्रक्रिया के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रदेश में अब सरकारी भर्ती परीक्षाओं का वार्षिक कैलेंडर जारी किया जा रहा है, ताकि युवाओं को स्पष्ट जानकारी मिल सके और अनिश्चितता समाप्त हो।

विकसित भारत का लक्ष्य : हमारी सरकार के लिए सुशासन अंत्योदय के लक्ष्य को साकार करने का मूल मंत्र है। हमने पिछले दो वर्षों में पारदर्शी और परिणाम आधारित शासन देने की दिशा में कई ठोस कदम उठाए हैं। ई-गवर्नेंस की ताकत को पहचानते हुए हमने प्रशासनिक प्रणाली में उत्तरदायित्व को बढ़ाया है। टिकाऊ विकास के लिए तात्कालिक समाधान के साथ ही दीर्घकालिक कार्य योजनाएं जरूरी होती हैं। हमने विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने के लिए छत्तीसगढ़ अंजोर विजन-2047 डाक्यूमेंट तैयार किया है। इसमें उद्योग, शिक्षा, कौशल विकास, एमएसएमई, पर्यटन, चिकित्सा समेत अलग-अलग क्षेत्र को चिन्हित करके उनके विकास के लिए चरणबद्ध रणनीति और मिशन तैयार किए हैं।

लोगों को सुविधाजनक जीवनशैली तथा उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री ने ईज आफ लाइफ और ईज आफ बिजनेस का मंत्र दिया। सरकारी विभागों में ई-आफिस के जरिये कामकाज में कई गुना तेजी और पारदर्शिता आई है। यह नवाचार कागज की बर्बादी भी रोकता है। हमारे प्रदेश की पंचायतों में अटल डिजिटल सुविधा केंद्र के जरिये आधार, राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड तथा बैंकिंग जैसी बुनियादी सुविधाएं लोगों तक एक क्लिक पर ही पहुंच रही हैं। रजिस्ट्री और नामांकन जैसी प्रक्रिया को हमने आसान बनाया है। न्यूनतम शासन, अधिकतम प्रशासन की दिशा में आगे बढ़ते हुए हमने पिछले डेढ़ साल में चार सौ से अधिक नीतिगत और प्रशासनिक सुधार किए हैं।

जैव विविधता की पहचान वाले प्रदेश में बड़ी संख्या में पर्यटक आ रहे हैं और होम-स्टे का आनंद ले रहे हैं। पिछले दो वर्षों में छत्तीसगढ़ के सर्वांगीण विकास के लिए जो भी नीतिगत निर्णय और सार्थक पहल की गईं, वह प्रदेश की जनता के विश्वास से मिली ऊर्जा का ही परिणाम है। जनता ने भाजपा और मुझ पर जो भरोसा किया, उसके अनुरूप दिन-रात मेहनत की है, अभी बहुत कुछ करना बाकी है। हमारे सामने अनगिनत सपने हैं। गांवों की खुशहाली, नौजवानों के लिए नए अवसर, माताओं-बहनों की सुरक्षा और सम्मान, किसानों की समृद्धि और आदिवासी अंचलों की तेज गति से प्रगति। ये केवल राजनीतिक वादे नहीं, बल्कि दिल से जुड़े संकल्प हैं, जिन्हें पूरा करना हमारी वैचारिक प्रतिबद्धता है। आने वाले समय में और अधिक परिश्रम, पारदर्शिता और जनभागीदारी के साथ छत्तीसगढ़ को विकास, सुशासन और संवेदना के नए शिखर तक ले जाने का प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

अभियान

रंग, रस और रिश्तों का उत्सव : समभाव से सजी होली

होली का नाम सुनते ही मन के आकाश में रंगों की इंद्रधनुषी छटा फैल जाती है। चेहरे पर सहज मुस्कान आ जाती है, हृदय में उल्लास की तरंगें उठने लगती हैं और वातावरण में एक अनकही आत्मीयता घुल जाती है। यह केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि जीवन की उमंग, समभाव और सामाजिक समरसता का पर्व है। शीत ऋतु की संकुचित ठंडक के बाद जब फाल्गुन की मादक हवाएं बहती हैं, तब शरीर और मन दोनों एक नई स्फूर्ति का अनुभव करते हैं। खेतों में लहलहाती सरसों का पीला रंग, गेहूं की सुनहरी बालियां और चने के हरे होले प्रकृति के आंचल को सजा देते हैं। ऐसा लगता है मानो स्वयं धरती मां भी रंगोत्सव की तैयारी में मग्न हो। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह उत्सव भारत के विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग नामों और परंपराओं के साथ मनाया जाता है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश और बिहार में इसे होली, फाग, धुलेंडी या फगुआ कहा जाता है। मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में रंग पंचमी के रूप में इसकी धूम रहती है। पश्चिम बंगाल और असम में इसे डोल पूर्णिमा या डोल जात्रा के रूप में मनाया जाता है, जहां राधा-कृष्ण की झांकियां सजती हैं और भक्ति के रंग बिखरते हैं। दक्षिण भारत के तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में इसे कामदहनम के रूप में जाना जाता है। इन विविध नामों और परंपराओं के बावजूद इसकी आत्मा एक ही है—रंगों के माध्यम से मन के भेद मिटाना और प्रेम का विस्तार करना। ब्रज की होली तो विश्वविख्यात है। बरसाना और वृंदावन में खेली जाने वाली लठमार होली में भक्ति और हास्य का अनूठा संगम दिखाई देता है। यहां श्रीकृष्ण और राधा के प्रेम की स्मृति में गोप-गोपियां रंग और रस की वर्षा करते हैं। किंतु इस उत्सव की मूल भावना उच्छृंखलता नहीं, बल्कि मर्यादा और आत्मीयता है। श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व आनंद और अनुशासन का संतुलन है। वे रंगों के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि जीवन में प्रेम का रंग सबसे स्थायी है। पौराणिक कथाओं में होली को भक्त प्रह्लाद, हिरण्यकशिपु और होलिका की कथा से भी जोड़ा जाता है। प्रह्लाद की अटूट भक्ति और सत्य के प्रति निष्ठा इस पर्व का नैतिक आधार है। होलिका का दहन केवल एक घटना नहीं, बल्कि अहंकार और अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि जब मन में श्रद्धा और विश्वास हो, तो विपरीत परिस्थितियां भी परास्त हो जाती हैं। इस प्रकार होली केवल रंगों की चंचलता नहीं, बल्कि आस्था और नैतिकता की गंभीरता का भी पर्व है। भारतीय संस्कृति में त्योहारों को प्रकृति और विज्ञान से गहराई से जोड़ा गया है। होली भी इसका अपवाद नहीं। ऋतु परिवर्तन के इस काल में वातावरण में अनेक प्रकार के जीवाणु

और संक्रमण बढ़ जाते हैं। परंपरागत होलिका दहन में गोबर के उपले, आम की लकड़ियां, देसी घी और औषधीय सामग्री का प्रयोग किया जाता है, जिससे वातावरण की शुद्धि होती है। प्राचीन काल में होली के रंग भी प्राकृतिक स्रोतों से बनाए जाते थे—सरसों, पलाश, अमलताश, हल्दी और नीम से तैयार रंग त्वचा के लिए लाभकारी होते थे। ये रंग त्वचा के छिद्रों को शुद्ध करते और शरीर को रोगों से बचाने में सहायक होते थे। इस प्रकार रंगों का यह खेल स्वास्थ्य और सौंदर्य दोनों का संवाहक था। होली का सामाजिक महत्व भी अत्यंत व्यापक है। यह पर्व भेदभाव की दीवारों को तोड़ने का अवसर देता है। समाज में जाति, वर्ग, आयु और लिंग के अंतर को भुलाकर सभी एक-दूसरे को रंग लगाते हैं। यह समभाव का जीवंत उदाहरण है। जब चेहरों पर एक ही रंग चढ़ जाता है, तो पहचान के सारे कृत्रिम चिह्न मिट जाते हैं। यही संदेश है कि हम सभी मूलतः एक ही चेतना के अंश हैं। होली का यह समन्वयी स्वरूप समाज में सौहार्द और सहयोग की भावना को सुदृढ़ करता है।

हरियाणा की होली-दुलंडी अपनी विशिष्ट परंपराओं के लिए जानी जाती है। वसंत पंचमी के दिन ही होली का स्थान निर्धारित कर डांडा गाड़ दिया जाता है। होलिका दहन के समय गेहूं और चने के भुट्टों को भूनकर 'होलक' के रूप में खाया जाता है। बच्चों के लिए बेर और मेवों की कंडी बनाई जाती है। फाग के गीतों में लोकजीवन की सहजता और हास्य का पुट होता है। यह केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामूहिकता का उत्सव है। दक्षिण भारत में कामदहनम की परंपरा शिव और कामदेव की कथा से जुड़ी है। मान्यता है कि समाधिस्थ भगवान शिव को कामदेव ने विचलित करने का प्रयास किया, जिससे क्रोधित होकर शिव ने उसे भस्म कर दिया। भगवान शिव द्वारा कामदेव का दहन आत्मसंयम और इंद्रिय-निग्रह का प्रतीक है। यह संदेश देता है कि जीवन की उत्कृष्टता के लिए वासनाओं पर नियंत्रण आवश्यक है। होली का यह आयाम हमें आंतरिक शुद्धि की प्रेरणा देता है। होली का एक आध्यात्मिक पक्ष भी है। रंगों का यह खेल केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक परिवर्तन का संकेत है। जब हम किसी को रंग लगाते हैं, तो उसके प्रति अपने मन की कटुता को भी धो डालते हैं। क्षमा और प्रेम का भाव मन में जागृत होता है। यही कारण है कि होली को 'मन का मैल मिटाने' का पर्व कहा गया है। यदि इस दिन हम अपने भीतर के द्वेष, ईर्ष्या और अहंकार को जला दें, तो जीवन में सच्ची शांति प्राप्त हो सकती है।

समकालीन समाज में जहां जीवन की गति तेज और संबंधों में दूरी बढ़ती जा रही है, वहां होली का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह हमें रुककर मुस्कुराने, गले मिलने और पुराने मतभेद भुलाने का अवसर देता है। आधुनिकता की दौड़ में यदि हम इस पर्व की मूल भावना को भूल जाएं और केवल दिखावे या उच्छृंखलता तक सीमित कर दें, तो इसका वास्तविक उद्देश्य खो जाएगा। आवश्यक है कि हम प्राकृतिक रंगों का उपयोग करें, पर्यावरण की रक्षा करें और मर्यादा का पालन करें। होली का वास्तविक संदेश समभाव और संयम है। रंगों का उत्साह तभी सुंदर है जब उसमें सम्मान और संवेदनशीलता हो। यह पर्व हमें सिखाता है कि जीवन में विविध रंगों का होना आवश्यक है, किंतु उनका संतुलन और सामंजस्य भी उतना ही जरूरी है। जैसे इंद्रधनुष के सभी रंग मिलकर सुंदर दृश्य रचते हैं, वैसे ही समाज के विविध वर्ग मिलकर एक सशक्त और सुंदर राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

अंततः होली केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन है। यह हमें प्रकृति के साथ तालमेल, समाज के साथ सामंजस्य और आत्मा के साथ संतुलन सिखाती है। यदि हम प्रेम, श्रद्धा और समभाव के साथ इसे मनाएं, तो यह हमारे जीवन में स्थायी आनंद का संचार कर सकती है। रंगों का यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि जीवन का वास्तविक सौंदर्य बाहरी आडंबर में नहीं, बल्कि भीतर के उजाले में है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

मुख्यमंत्री की प्रेरक उपस्थिति में शांतिग्राम में श्री स्वामीनारायण गुरुकुल के नूतन भवन का उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ

▸▸ गुजरात सेमीकंडक्टर हब द्वारा युवा शक्ति के कौशल एवं ज्ञान से आत्मनिर्भरता की ओर प्रयाण करेगा : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ शिक्षा, संस्कार एवं टेक्नोलॉजी का त्रिवेणी संगम : स्वामीनारायण गुरुकुल द्वारा विकसित भारत के निर्माण को नई दिशा मिलेगी

जीएनएस)। गांधीनगर : नर्मदा नहर तट पर स्थित श्री स्वामीनारायण गुरुकुल शांतिग्राम में सोमवार को भव्य तथा मंगलमय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा पूज्य संतों की विशेष उपस्थिति में विभिन्न प्रकल्पों का लोकार्पण किया गया।

समारोह में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से नूतन भवन के प्रवेश द्वार पर शिलालेख का अनावरण तथा नूतन भवन का उद्घाटन किया गया। संतों के चरणों में वंदन के साथ उपस्थित हरिभक्तों और विद्यार्थियों को रंग तथा उमंग के उत्सव होली की शुभकामनाएँ देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारा प्राचीन इतिहास साक्षी है कि होली समाज में अज्ञान, अनिष्ठ एवं अंधकार के विरुद्ध ज्ञान एवं संस्कार की अग्नि प्रज्ज्वलित करने वाला पर्व है। सनातन धर्म संस्कृति की अटल आस्था की हजारों वर्षों की इस ज्योत का प्रकाश समाज में अधिक व्यापक बनाने के लिए विश्व नेता तथा हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा व मार्गदर्शन में हम सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मना रहे हैं। इतना ही नहीं, प्रधानमंत्री ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा भारत को ज्ञान एवं संस्कार से समृद्ध बनाने की दिशा दी है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में कार्यरत श्री स्वामीनारायण गुरुकुल राजकोट संस्थान भी विद्यार्थियों को समयानुकूल शिक्षा प्रदान करता है। यहाँ विद्यार्थियों को आध्यात्मिक मूल्यों के साथ 21वीं शताब्दी के भारत के लिए आवश्यक साइंस, टेक्नोलॉजी तथा इनोवेशन की नॉलेज मिले, यह वर्तमान समय की मांग है।

उन्होंने कहा कि आज जब विश्व में टेक्नोलॉजी की प्रतिस्पर्धा चल रही है, तब प्रधानमंत्री ने

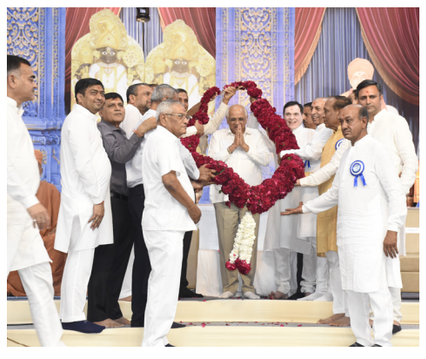

हमारे देश को उसमें अग्रसर तथा सज्ज करने की मंशा रखी है। इसके लिए आगामी युग की टेक्नोलॉजी समान सेमीकंडक्टर सेक्टर में गुजरात को हब बनाने की ऐतिहासिक पहल उनके नेतृत्व में हमने दो दिन पहले साणंद में माइक्रोन के प्लांट के लोकार्पण अवसर पर देखी है। आज गौरवशाली इतिहास लिखा जा रहा है। भविष्य में सेमीकंडक्टर क्षेत्र में बहुत बड़ी मांग उत्पन्न होने वाली है। उसे पूरा करने हेतु युवाओं के लिए चिप डिजाइन, एआई, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा एडवांस टेक्नोलॉजी का अभ्यास भी अनिवार्य होगा। हाल में लगभग 35 विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी इस चिप डिजाइन का अभ्यास कर रहे हैं। गुजरात में हम आईआईटी-गांधीनगर के साथ समन्वय कर फैब्रिकेशन लैब भी तैयार कर रहे हैं। श्री स्वामीनारायण गुरुकुल राजकोट की यह शांतिग्राम शाखा यदि संस्कार एवं कौशल के समन्वय से सेमीकॉन इंडस्ट्रीज के लिए युवा तैयार करने वाले पाठ्यक्रम शुरू करे, तो इससे उत्तम कार्य और कोई नहीं हो सकता।

श्री पटेल ने कहा कि स्वतंत्रता के उदयकाल में ई. स. 1948 में पूज्य शास्त्रीजी श्री धर्मजीवनदासजी स्वामी द्वारा स्थापित किया गया यह गुरुकुल आज शिक्षा के साथ संस्कार, अध्यात्म एवं राष्ट्रप्रेम का एक पवित्र तीर्थ बन गया है। एसजीआरएस गुरुकुल की छात्रालय व गुरुकुल परंपरा आज अनेक विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ जीवन निर्माण के पाठ भी सिखाती है। ऐसा संस्थान केवल डिग्री धारक ही नहीं, बल्कि संस्कार धारक, सशक्त समाज तथा सक्षम राष्ट्र के आधारस्तंभ समान युवाधन को तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

भगवान स्वामीनारायण के आदर्श अनुशासन, सेवा, सदाचार एवं समर्पण के साथ टेक्नोलॉजी तथा संस्कृति के समन्वय से यह ज्ञान केन्द्र प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करेगा।

केवल सात विद्यार्थियों से शुरू हुई इस शैक्षणिक यात्रा ने अब तक 1.90 लाख से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा व संस्कार दिए हैं, जिसके परिणामस्वरूप अनेक परिवारों के बच्चे यहाँ से डॉक्टर, इंजीनियर तथा उच्चाधिकारी बनकर समाज की सेवा कर रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत 2047 का जो संकल्प किया है, उसे साकार करने के लिए उन्होंने डेमोग्राफिक डिविडेंड समान युवा शक्ति के सशक्तिकरण पर ध्यान केन्द्रित किया है। श्री शांतिग्राम स्वामीनारायण गुरुकुल यूथ एम्पावरमेंट के लिए यूपीएससी तथा जीपीएससी जैसी प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं के कोचिंग सेंटर, सपोर्ट अकादमी तथा अत्याधुनिक हॉस्टल द्वारा अभ्यास की सुविधा प्रदान करता है। आज जो नवनिर्मित भवन बना है, उसका उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इस भवन निर्माण के दाता तो भाग्यशाली हैं ही, परंतु इस भवन को यहाँ आने वाले गरीब एवं मध्यम वर्ग के हर विद्यार्थी पर भी भगवान का आशीर्वाद कहा जा सकता है। उन्होंने कहा कि संस्थान के माध्यम से विद्यार्थियों को भगवान द्वारा इतनी उत्तम सुविधाएँ मिल रही हैं। लेटेस्ट सुविधाओं के साथ निर्मित इस भवन में 4000 विद्यार्थी पढ़ सकते हैं और 1500 विद्यार्थी रह सकते हैं। उन्होंने शुभकामनाएँ दीं कि यहाँ जो भी विद्यार्थी अभ्यास करेगा, उस पर भगवान स्वामीनारायण का आशीर्वाद सदैव रहेगा और वह समाज तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी बनेगा।

वडोदरा मंडल द्वारा होली पर्व के अवसर पर विशेष ट्रेनों का परिचालन , मंडल रेल प्रबंधक राजू भडके ने किया वडोदरा स्टेशन का दौरा

जीएनएस)। होली पर्व के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा वडोदरा रेलवे स्टेशन पर व्यापक व्यवस्थाएँ की गई हैं। विशेष रूप से उत्तर भारत की ओर होली मनाने हेतु यात्रा करने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए अतिरिक्त स्पेशल ट्रेनें चलायी जा रही हैं। व्यवस्थाओं का निरीक्षण करने हेतु मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने वरिष्ठ रेल अधिकारियों के साथ आज वडोदरा स्टेशन का दौरा किया। उन्होंने भीड़ नियंत्रण, यात्री सुविधाओं, टिकट व्यवस्था, स्वच्छता एवं सुरक्षा प्रबंधों की समीक्षा की।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने बताया कि नियमित ट्रेनों के अतिरिक्त वडोदरा से गोरखपुर, मऊ एवं जयपुर (खातीपुरा) गंतव्यों के लिए विशेष ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है। इन विशेष ट्रेनों के परिचालन से त्योहार के दौरान अतिरिक्त भीड़ का सुव्यवस्थित प्रबंधन किया जा रहा है जिससे यात्रियों को सुरक्षित, आरामदायक एवं समयबद्ध यात्रा सुविधा उपलब्ध होगी। अब तक वडोदरा से इन तीनों विशेष ट्रेनों की कुल 14 यात्राओं (ट्रिप्स) की अधिसूचना जारी की जा चुकी है।

उन्होंने आगे बताया कि पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के अधिकारी वडोदरा स्टेशन पर भीड़ की स्थिति की सतत निगरानी कर रहे हैं। अतिरिक्त स्टाफ की तैनाती, प्रभावी उद्घोषणा व्यवस्था, स्वच्छता पर विशेष ध्यान तथा सुदृढ़ सुरक्षा प्रबंध सुनिश्चित किए गए हैं, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

अहमदाबाद रेल मंडल में "सेवा संकल्प" कार्यक्रम का आयोजन अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने लिया जनसेवा का संकल्प

केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्देशानुसार पारदर्शी, उत्तरदायी एवं नागरिक-केन्द्रित प्रशासन को सुदृढ़ करने की पहल

जीएनएस)। केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अपनाए गए "सेवा संकल्प" के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद रेल मंडल में मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश के नेतृत्व में मंडल कार्यालय, अहमदाबाद में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम भारत सरकार की जनसेवा, पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

कार्यक्रम में मंडल के वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया तथा "सेवा संकल्प" की भावना को आत्मसात करते हुए नागरिक-केन्द्रित, पारदर्शी एवं जवाबदेह प्रशासन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। इस अवसर पर कैबिनेट सचिवालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप कार्यसंस्कृति में दक्षता, पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया गया। अपने संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक ने कहा कि भारतीय रेल देश की जीवनरेखा है तथा यात्रियों एवं आम नागरिकों को सुरक्षित, विश्वसनीय एवं गुणवत्तापूर्ण सेवाएं

प्रदान करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे जनहित को सर्वोपरि रखते हुए कार्य करें तथा सेवा वितरण प्रणाली में निरंतर सुधार लाते हुए उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर रहें। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य रेलवे सेवाओं की गुणवत्ता में निरंतर सुधार सुनिश्चित करना तथा यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित एवं विश्वसनीय सेवाएं प्रदान करने की दिशा में मंडल की प्रतिबद्धता को और अधिक सुदृढ़ करना है। "सेवा संकल्प" के माध्यम से अहमदाबाद मंडल सुशासन, पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व के सिद्धांतों को व्यवहार में उतारते हुए जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के लिए प्रतिबद्ध है। रेलवे परिसरों में यात्री एवं श्रमिक सुविधाओं के सुधार हेतु सुझाव

"सेवा संकल्प" की भावना के अनुरूप यात्रियों एवं श्रमिकों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए गए:

जनरल कोच में आवश्यक सुविधाएं

रेलवे स्टेशनों पर पेयजल की सुविधा

गुड्स शेड में कार्यरत श्रमिकों के लिए सुविधाएं

गुड्स शेड में कार्यरत श्रमिकों के लिए निम्नलिखित मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए:

- पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था
- स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता
- पंखे एवं उचित वेंटिलेशन की व्यवस्था

OBHS स्टाफ के लिए आश्रय (Shelter) की व्यवस्था

ऑन बोर्ड हाउसकीपिंग सर्विस (OBHS) स्टाफ के लिए सुरक्षित एवं उचित आश्रय तथा विश्राम की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे वे बेहतर तरीके से अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकें।

श्रमिकों को उचित भुगतान सुनिश्चित करने हेतु प्रणाली

यह सुनिश्चित करने के लिए एक पारदर्शी प्रणाली विकसित की जानी चाहिए कि श्रमिकों को उनका वास्तविक और पूर्ण भुगतान समय पर प्राप्त हो। इसके अंतर्गत:

- डिजिटल भुगतान प्रणाली को बढ़ावा दिया जाए
- नियमित सत्यापन किया जाए
- शिकायत निवारण तंत्र स्थापित किया जाए

लोडिंग प्रणाली में सुधार

गुड्स शेड में लोडिंग प्रणाली को अधिक सुरक्षित और श्रमिकों के अनुकूल बनाया जाना चाहिए, विशेषकर गर्मी के मौसम में डिहाइड्रेशन से बचाव हेतु। इसके लिए:

- यांत्रिक लोडिंग/अनलोडिंग को बढ़ावा दिया जाए
- छाया (शेड) की व्यवस्था की जाए
- पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए
- अत्यधिक गर्मी के समय कार्य के लिए उचित समय निर्धारण किया जाए

Semicon 2.0 के तहत भारत ने 4 वर्षों में 85,000 सेमीकंडक्टर इंजीनियर तैयार किए; 500 विश्वविद्यालयों तक विस्तार का लक्ष्य

जीएनएस)। असम से गुजरात और कश्मीर से कन्याकुमारी तक देशभर के विश्वविद्यालयों के छात्र सेमीकंडक्टर डिजाइन में सक्रिय भागीदारी कर रहे हैं। भारत सरकार के सेमीकंडक्टर मिशन के अंतर्गत प्रतिभा विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि भारत ने सेमीकंडक्टर डिजाइन में 85,000 इंजीनियरों को प्रशिक्षित करने का 10 वर्षों का लक्ष्य मात्र 4 वर्षों में ही प्राप्त कर लिया है।

मंत्री ने बताया कि देश के 315 विश्वविद्यालयों में विश्व के अत्याधुनिक इलेक्ट्रॉनिक डिजाइन ऑटोमेशन (EDA) टूल्स—Cadence, Synopsys और Siemens—उपलब्ध कराए गए हैं। इन टूल्स की सहायता से छात्र वास्तविक सेमीकंडक्टर चिप डिजाइन कर रहे हैं। इन चिप्स का निर्माण और परीक्षण Semiconductor Laboratory (SCL) Mohali में किया जा रहा है, जिससे छात्रों को डिजाइन से लेकर निर्माण और वैलिडेशन तक की संपूर्ण प्रक्रिया का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो रहा है।

उन्होंने कहा कि आज देशभर में असम से गुजरात और कश्मीर से कन्याकुमारी तक विश्वविद्यालयों के छात्र सक्रिय रूप से सेमीकंडक्टर डिजाइन में भाग ले रहे हैं। यह भारत की तकनीकी क्षमता और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

मंत्री ने वैश्विक उद्योग की आवश्यकताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि सेमीकंडक्टर उद्योग के वर्तमान आकार के 800–900 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचने पर लगभग 20 लाख कुशल पेशेवरों की आवश्यकता होगी। यह भारत के युवाओं के लिए रोजगार के विशाल अवसर प्रस्तुत करता है।

उन्होंने आगे घोषणा की कि Semicon 2.0 के तहत इस कार्यक्रम का विस्तार करते हुए 315 विश्वविद्यालयों की संख्या को बढ़ाकर 500 विश्वविद्यालयों तक किया जाएगा। इससे देश के प्रत्येक राज्य में सेमीकंडक्टर डिजाइन, निर्माण, परीक्षण और वैलिडेशन में प्रशिक्षित प्रतिभाओं का एक मजबूत और निरंतर आधार विकसित होगा।

मंत्री ने कहा कि भारत सरकार सेमीकंडक्टर क्षेत्र में एक मजबूत और आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है। Semicon 2.0 के अंतर्गत प्रतिभा विकास, बुनियादी ढांचे के निर्माण और उद्योग सहयोग के माध्यम से भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर केंद्र के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद में होली पर्व उत्सव में सहभागी होकर होली के दर्शन किए

मुख्यमंत्री ने मेमनगर के मानव मंदिर में वैदिक होली के दर्शन-परिक्रमा कर राज्य के नागरिकों के सुख, समृद्धि एवं सर्वांगीण विकास के लिए प्रार्थना की

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सोमवार को होली के पवित्र पर्व के उपलक्ष्य में अहमदाबाद के मेमनगर क्षेत्र में आयोजित होली दर्शन कार्यक्रम में प्रत्यक्ष रूप से सहभागी होकर नागरिकों के साथ पर्व को हर्षोल्लासपूर्वक मनाया।

इस वर्ष मेमनगर में मानव मंदिर में पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने वाली 'वैदिक होली' प्रज्ज्वलित की गई। मुख्यमंत्री ने परंपरागत होली पूजन विधि में श्रद्धापूर्वक भाग लिया और प्रज्ज्वलित की गई होली के दर्शन-परिक्रमा कर राज्य के नागरिकों के सुख, समृद्धि एवं सर्वांगीण विकास

के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि होली का यह पवित्र पर्व असत्य पर सत्य की विजय एवं रंगों का पर्व है। यह त्योहार हम सबके जीवन में राग-द्वेष भूलकर एक-दूसरे से स्नेह से मिलने का और सामाजिक समरसता का संदेश देता है। हम सब साथ मिलकर इस रंगोत्सव को इस प्रकार मनाएँ, जिससे पर्यावरण का भी जतन हो। वैदिक होली प्रज्ज्वलित कर यहाँ पर्यावरण के प्रति जो जागृति दर्शाई गई है, वह प्रशंसनीय है।

होली दर्शन के बाद मुख्यमंत्री ने विख्यात मानव मंदिर में जाकर भगवान के दर्शन कर धन्यता की अनुभूति की। उन्होंने इस दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं, भक्तों तथा स्थानीय नगरजनों के साथ शुभकामनाओं का आदान-प्रदान किया।

इस अवसर पर अहमदाबाद महानगर (मनपा) की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री देवांगभाई दाणी, अहमदाबाद मनपा परिवहन सेवा (एएमटीएस) के अध्यक्ष श्री धरमशीभाई देसाई, मनपा पदाधिकारी, स्थानीय पार्षद, अग्रणी, पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

गुजरात शहरी विकास मिशन को मिलेगा 'बेस्ट कम्युनिटी इम्पैक्ट प्रोजेक्ट अवॉर्ड'

अत्याधुनिक कमांड एंड कंट्रोल सेंटर और टेक्नोलॉजी के उपयोग से शहरी विकास ने किया ध्यान आकर्षित

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य के शहरों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित करने के लिए विभिन्न पहलें शुरू की गई हैं। इसके लिए गुजरात शहरी विकास मिशन (जीयूडीएम) बड़े शहरों के साथ-साथ राज्य के नगर पालिका क्षेत्रों में भी आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर और उचित आयोजन के जरिए नागरिकों की सुख-सुविधाओं को बेहतर बना रहा है।

शहरी विकास के लिए राज्य सरकार के आयोजन को ध्यान में रखते हुए इंडिया वाटर फाउंडेशन (आईडब्ल्यूएफ) ने गुजरात की 156 नगर पालिकाओं में सीवर नेटवर्क के सफाई व्यवस्था के निरीक्षण के लिए बनाए गए इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर के लिए 'बेस्ट कम्युनिटी इम्पैक्ट प्रोजेक्ट अवॉर्ड' प्रदान करने की घोषणा की है। राज्य सरकार के शहरी विकास और शहरी गृह निर्माण विभाग मंत्री श्री कनुभाई देसाई के दिशा-निर्देश में अत्याधुनिक इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर का निर्माण कर टेक्नोलॉजी के उपयोग से इस व्यवस्था को और सुदृढ़ बनाया गया है। राज्य की नगर पालिकाओं में सीवर नेटवर्क का रखरखाव और बेहतर तरीके से हो रहा है और पानी के पुनः उपयोग के कारण लाखों लीटर पानी को बचाने में भी सफलता मिली है। टेक्नोलॉजी के समन्वय से कामकाज का और भी अच्छी तरह से निरीक्षण संभव हो पाया है। इस प्रकार, पर्यावरण के अनुकूल शहरी विकास के विजन को सार्थक बनाया जा रहा है।

राज्य सरकार के इस कार्य को ध्यान में लेकर बेस्ट कम्युनिटी इम्पैक्ट प्रोजेक्ट का जूरी अवॉर्ड दिया गया है। इंडिया वाटर फाउंडेशन की ओर से 6 और 7 मार्च को नई दिल्ली में आयोजित वाटर ट्रांसवर्सेलिटी ग्लोबल अवॉर्ड्स और कॉन्क्लेव 2026 के दौरान जीयूडीएम को 'बेस्ट कम्युनिटी इम्पैक्ट प्रोजेक्ट अवॉर्ड' दिया जाएगा।

सेवा भावना को सशक्त बनाने की दिशा में भावनगर रेलवे मंडल की महत्वपूर्ण पहल

"सेवा संकल्प प्रस्ताव" के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु उच्चस्तरीय बैठक आयोजित

जीएनएस)। भारतीय रेल द्वारा नागरिक-केंद्रित, उत्तरदायी एवं संवेदनशील प्रशासन को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से अंगीकृत "सेवा संकल्प प्रस्ताव" के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल में एक महत्वपूर्ण उच्चस्तरीय बैठक का आयोजन मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, भावनगर परा स्थित सभा कक्ष में किया गया। बैठक की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने की। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक शर्मा सहित मंडल के सभी विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार बैठक के दौरान सेवा संकल्प प्रस्ताव का विधिवत वाचन किया गया तथा इसके उद्देश्यों, कार्यसंस्कृति में अपेक्षित परिवर्तन तथा क्षेत्रीय स्तर पर इसके प्रभावी क्रियान्वयन के उपायों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। अधिकारियों ने सेवा भावना, पारदर्शिता, जवाबदेही एवं जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर बल दिया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि भारतीय रेल केवल परिवहन सेवा नहीं बल्कि देश के करोड़ों नागरिकों के जीवन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक व्यवस्था है। ऐसे में यात्रियों एवं आम नागरिकों को प्रदान की जा रही सेवाओं को अधिक प्रभावी, समयबद्ध, संवेदनशील तथा परिणामोन्मुख बनाना प्रत्येक रेल अधिकारी एवं कर्मचारी की प्राथमिक जिम्मेदारी है। उन्होंने सेवा संकल्प की भावना को दैनिक कार्यप्रणाली में आत्मसात करते हुए उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने का आह्वान किया।

बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों ने रेलवे द्वारा उपलब्ध कराई जा रही यात्री सुविधाओं एवं प्रशासनिक सेवाओं को और अधिक दक्ष, पारदर्शी एवं जनहितकारी ढंग से लागू करने का सामूहिक संकल्प लिया। साथ ही "नागरिक देवो भव" की भावना के अनुरूप सेवा-उन्मुख कार्य संस्कृति को अपनाते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

यह बैठक भावनगर मंडल में उत्कृष्ट प्रशासनिक कार्यप्रणाली, गुणवत्तापूर्ण सेवाओं तथा विकसित भारत के राष्ट्रीय संकल्प को गति प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

वेस्टर्न रेलवे - रतलाम डिवीज़न

W/623/5/3/NIT — **ई-टेंडरिंग नोटिस** — तारीख 27.02.2026

डिवीज़नल रेलवे मैनेजर (WA) रतलाम, भारत के राष्ट्रपति की ओर से वेबसाइट www.ireps.gov.in पर ई-टेंडर के ज़रिए *ओपन टेंडर* मंगाते हैं, डिटेल्स नीचे दी गई हैं: -

क्र. नं.	ई-टेंडर नंबर और काम का नाम	लगभग कीमत ₹	EMD में ₹	पूरा होने का समय
1	RTM-2025-26-146R गोधरा-रतलाम सेक्शन:- LC 80 Km: 650/22-24 के बदले RUB पर ड्रेनेज सिस्टम में सुधार। इसी तरह का काम: कोई भी सिविल इंजीनियरिंग का काम।	1,61,55,345.73	2,30,800/-	18 महीने

लगभग मात्रा: टेंडर शेड्यूल के अनुसार। वेबसाइट पर अपलोड करने की तारीख: 27.02.2026। टेंडर खुलने की तारीख: 23.03.2026। डिटेल्ड टेंडर नोटिस, एलिजिबिलिटी क्राइटेरिया और नियम और शर्तें वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध हैं। AK/5/1/488

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly • हमें फॉलो करें: X.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे – रतलाम मंडल

शुद्धिपत्र

मण्डल रेल प्रबंधक/मण्डल कार्यालय (कार्यलेखा शाखा) रतलाम द्वारा जारी **निविदा सूचना संख्या कार्य / 623 / NIT / 1 दिनांक 29.01.2026 के अंतर्गत जारी निविदा संख्या -RTM - 2025-26-177 कार्य का नाम: 1.** Chittaurgarh - Provision of Ballast less track at PF Line no. 2 (DN ML), PF line no. 4 (Common Loop line) and PF no. 5 (UP Loop line) and **2.** Ujjain station - Provision of Ballastless track on PF no.1 (DN main), PF no. 3/4(loop), PF no.5 (Loop) & PF no.6 (loop) line " उपरोक्त टेंडर जो की दिनांक 27.02.2026 को खोली जानी थी, **अब दिनांक 16.03.2026 को खोली जायेगी।** AK/5/1/487

हमें लाईक करें: facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे – रतलाम मंडल

ई- निविदा सूचना

वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर, कर्षण वितरण, रतलाम मंडल, पश्चिम रेलवे भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य हेतु IREPS पोर्टल के माध्यम से खुली निविदाएं आमंत्रित करते हैं: **निविदा संख्या: EL/TRD/58/2025-26, दिनांक: 26.02.2026. कार्य का नाम:** Replacement of old contact wire with silver-brazed joints and contact wire containing the maximum number of splices, along with replacement of isolators having low current-carrying capacity over Ratlam Division. **अनुमानित लागत:** रु. 1,62,14,164.75. **बयाना राशि:** रु. 2,31,100/-. **समापन अवधि:** 18 Months. **निविदा दस्तावेज़ की राशि:** Nil. **ऑनलाइन बिडिंग बंद होने की दिनांक एवं समय:** 27.03.2026 at 15:00 hrs. **ऑफर की वैधता:** 60 days from the date of opening. **वेबसाइट: www.ireps.gov.in नोटिस बोर्ड:** वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर, कर्षण वितरण, रतलाम मंडल, पश्चिम रेलवे के कार्यालय के प्रवेश द्वार के सामने। AK/13/1/486

हमें लाईक करें: facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे – रतलाम मंडल

ई-टेंडरिंग नोटिस

निम्न कार्य के लिए मण्डल रेल प्रबंधक (एस एण्ड टी) पश्चिम रेल्वे रतलाम द्वारा भारत के राष्ट्रपति की ओर से व उनके लिए ई-निविदाए आमंत्रित की जाती है। **निविदा संख्या: SnT_RTM_25_24_R_SIGNAL, दिनांक: 28.02.26. कार्य का नाम:** गोधरा - नागदा खंडः सुरक्षा और विश्वसनीयता में सुधार तथा दोषपूर्ण/पुराने मिडलाइफ सिग्नलिंग गियर और उपकरणों का प्रतिस्थापन। **कार्य की अनुमानित लागत:** रु. 5,76,88,912.69. **बयाना राशि:** रु. 4,38,500/-. **निविदा बंद करने का समय एवं दिनांक:** दिनांक 24.03.2026 समय 15:00 बजे तक। **निविदा खुलने का समय एवं दिनांक:** दिनांक 24.03.2026 समय 15:30 बजे के बाद। **कार्य पूरा करने की अवधि:** 12 माह। **निविदा अनुभाग कार्यालय प्रभारी और बोली खोलने का स्थान:** सीनियर डीएसटीई रतलाम, डीआरएम कार्यालय रतलाम म.प्र.। निविदा सिर्फ अनलाइन ई-निविदा पोर्टल **www.ireps.gov.in** पर देखा व जमा किया जा सकता है। AK/6/1/491

हमें लाईक करें: facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे – रतलाम मंडल

संख्या- W/623/5/3/NIT — **ई-टेंडरिंग नोटिस** — दिनांक: 28.02.2026

मंडल रेल प्रबंधक मंडल कार्यालय (कार्यलेखा शाखा) पश्चिम रेलवे रतलाम भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिये "खुली निविदा" ई-निविदा के माध्यम से वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर आमंत्रित करते है। विवरण इस प्रकार है-

क्र. सं.	ई-टेंडरिंग संख्या और कार्य का नाम	अनुमानित लागत रू	बयाना राशि रू	कार्य समापन अवधि
1	RTM-2025-26-103R1 Dahod Station-Construction of RCC Lift Well in Connection to Provision of Lift (3 Nos.) **Similar type of work: Any Civil Engineering Work involving construction of Lift Well OR construction of Framed Structure of 3 & above Storeys Or Construction of Overhead Water Tank i.e. INTZ Tanks.**	1,00,94,849.38	2,00,500/-	12 माह

अनुमानित मात्रा: As per tender schedule. **वेबसाईट पर अपलोड करने की तिथि: 28.02.2026. निविदा खुलने की तिथि: 24.03.2026.** विस्तृत निविदा सूचना, अहाता शर्तें एवं अन्य शर्तें वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। AK/5/1/492

हमें लाईक करें: facebook.com/WesternRly • हमें फॉलो करें: X.com/WesternRly

डिजाइन की उड़ान: 'सेमीकॉन 2.0' से भारत बनेगा वैश्विक चिप नवाचार का केंद्र

जीएनएस)। गांधीनगर। भारत के तकनीकी भविष्य की दिशा अब केवल कारखानों की चिमनियों से नहीं, बल्कि प्रयोगशालाओं, डिजाइन स्टूडियो और विश्वविद्यालयों की शोध मेजों से तय होगी। 'गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026' के मंच से केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने जब 'सेमीकंडक्टर मिशन 2.0' का विजन प्रस्तुत किया, तो यह स्पष्ट हो गया कि भारत अब केवल विनिर्माण तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि सेमीकंडक्टर डिजाइन और डीप-टेक नवाचार का वैश्विक केंद्र बनने की ओर निर्णायक कदम बढ़ा चुका है। मंत्री वैष्णव ने कहा कि सेमीकॉन 1.0 का लक्ष्य देश में सेमीकंडक्टर संयंत्र स्थापित करना था, और उस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। अब तक 10 संयंत्रों को मंजूरी मिल चुकी है और इनमें से एक ने व्यावसायिक उत्पादन भी प्रारंभ कर दिया है। यह उपलब्धि केवल औद्योगिक विकास का संकेत नहीं, बल्कि भारत की आत्मनिर्भरता के संकल्प का प्रमाण है। किंतु सेमीकॉन 2.0 का उद्देश्य इससे कहीं व्यापक और दूरदर्शी है—भारत को चिप डिजाइनिंग और डीप-टेक स्टार्टअप्स का वैश्विक हब बनाना।

दुनिया तेजी से डिजिटल युग की ओर बढ़ रही है, जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग, ऑटोमेशन, 5G-6G संचार और स्वायत्त वाहनों जैसी तकनीकों की रीढ़ सेमीकंडक्टर चिप्स हैं। अनुमान है कि वैश्विक सेमीकंडक्टर उद्योग शीघ्र ही 1000 अरब डॉलर का आंकड़ा पार कर जाएगा। इस विस्तार के साथ लगभग 20 लाख कुशल पेशेवरों की आवश्यकता होगी। भारत इस अवसर को केवल बाजार के रूप में नहीं, बल्कि समाधान प्रदाता के रूप में देख रहा है।

मंत्री ने जानकारी दी कि सरकार ने पहले चरण में 85,000 इंजीनियरों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य चार वर्षों में ही पूरा कर लिया है। यह उपलब्धि दर्शाती है कि भारत के युवाओं में तकनीकी दक्षता और सीखने की क्षमता प्रचुर मात्रा में मौजूद है। अब सेमीकॉन 2.0 के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार किया जाएगा। वर्तमान में 350 विश्वविद्यालयों में सेमीकंडक्टर से जुड़े पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं, जिन्हें बढ़ाकर 500 विश्वविद्यालयों तक ले जाया जाएगा। इसका अर्थ है कि देश के लगभग हर राज्य में छात्रों को चिप डिजाइन, निर्माण, परीक्षण और सत्यापन जैसे उच्च तकनीकी क्षेत्रों में विशेषज्ञता

हासिल करने का अवसर मिलेगा।

इस मिशन का एक महत्वपूर्ण पहलू 'डिजाइन इकोसिस्टम' का निर्माण है। अब तक वैश्विक स्तर पर चिप डिजाइन का वर्चस्व कुछ बड़ी कंपनियों के हाथों में रहा है, जैसे क्वालकॉम और एनवीडिया। भारत का लक्ष्य है कि आने वाले वर्षों में ऐसी ही विश्वस्तरीय कंपनियाँ भारतीय धरती से उभरें। इसके लिए सरकार स्टार्टअप्स को पूंजी, मेंटरशिप, अत्याधुनिक डिजाइन टूल्स और परीक्षण अवसंरचना उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान दे रही है।

डीप-टेक स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने की यह रणनीति केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं है। इससे राष्ट्रीय सुरक्षा, साइबर संप्रभुता और रणनीतिक स्वतंत्रता भी सुदृढ़ होगी। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन भू-राजनीतिक तनावों से प्रभावित रही है। ऐसे में यदि भारत अपनी संपूर्ण सप्लाई चेन—कच्चे माल से लेकर मशीनरी, उपकरण, परीक्षण और पैकेजिंग तक—देश में विकसित कर लेता है, तो वह न केवल आयात पर निर्भरता घटाएगा, बल्कि वैश्विक बाजार में एक अनिवार्य शक्ति के रूप में उभरेगा।

सेमीकॉन 2.0 के तहत सरकार सामग्री, मशीनरी और उपकरण निर्माण के क्षेत्र में भी निवेश बढ़ा रही है। अब तक सेमीकंडक्टर उद्योग का बड़ा हिस्सा विशेष मशीन टूल्स और परीक्षण उपकरणों के आयात पर निर्भर रहा है। नई नीति का उद्देश्य इन घटकों का स्वदेशी विकास करना है। इससे लागत में कमी आएगी, रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और तकनीकी विशेषज्ञता देश के भीतर ही विकसित होगी।

गांधीनगर में आयोजित 'गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026' ने यह स्पष्ट कर दिया कि राज्य सरकारें भी इस राष्ट्रीय मिशन में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। गुजरात पहले ही सेमीकंडक्टर विनिर्माण के क्षेत्र में अग्रणी बन चुका है और अब डिजाइन व अनुसंधान केंद्रों की स्थापना के लिए भी प्रयासरत है। अन्य राज्य भी प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में निवेश आकर्षित करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

युवाओं के लिए यह पहल एक स्वर्णिम अवसर लेकर आई है। अब इंजीनियरिंग शिक्षा केवल पारंपरिक आईटी या सॉफ्टवेयर सेवाओं तक सीमित नहीं रहेगी। चिप आर्किटेक्चर, वीएलएसआई डिजाइन, एम्बेडेड सिस्टम, परीक्षण इंजीनियरिंग और फेब्रिकेशन टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त कर छात्र वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकेंगे। इससे 'ब्रेन ड्रेन' की प्रवृत्ति भी कम होगी और प्रतिभा देश में ही नवाचार को गति देगी।

मंत्री वैष्णव ने यह भी रेखांकित किया कि यह यात्रा सरल नहीं है। सेमीकंडक्टर उद्योग अत्यंत जटिल और पूंजी-सघन है। एक संयंत्र की स्थापना में हजारों करोड़ रुपये और वर्षों का समय लगता है। परंतु सरकार ने इस चुनौती को व्यावहारिक दृष्टिकोण से स्वीकार किया है। नीतिगत स्पष्टता, त्वरित अनुमोदन प्रक्रिया और वित्तीय प्रोत्साहनों के माध्यम से निवेशकों का विश्वास मजबूत किया जा रहा है।

भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था पहले ही तीव्र गति से बढ़ रही है। यूपीआई, आधार, डिजिटल भुगतान और ई-गवर्नेंस जैसी पहलों ने देश को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाई है। अब सेमीकंडक्टर डिजाइन और निर्माण में आत्मनिर्भरता इस डिजिटल क्रांति को स्थायी आधार प्रदान करेगी। यदि चिप्स का उत्पादन और डिजाइन देश में ही होगा, तो इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, रक्षा और दूरसंचार जैसे क्षेत्रों को सीधा लाभ मिलेगा इस पहल का एक सामाजिक आयाम भी है। लाखों नए रोजगार सृजित होंगे—केवल उच्च तकनीकी पदों पर ही नहीं, बल्कि सहायक उद्योगों, लॉजिस्टिक्स, अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थानों में भी। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूती मिलेगी और कौशल विकास को नई दिशा मिलेगी।

सेमीकॉन 2.0 वस्तुतः आत्मनिर्भर भारत की उस व्यापक परिकल्पना का हिस्सा है, जिसमें भारत केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि निर्माता और नवप्रवर्तक की भूमिका निभाएगा। आने वाले दशक में यदि भारत डिजाइन, परीक्षण और मशीन टूल्स निर्माण में वैश्विक मानक स्थापित कर पाता है, तो यह आर्थिक इतिहास का एक निर्णायक मोड़ सिद्ध होगा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि 'सेमीकंडक्टर मिशन 2.0' केवल एक औद्योगिक नीति नहीं, बल्कि तकनीकी स्वराज का घोष है। यह उस भविष्य की आधारशिला है जहाँ भारतीय युवाओं की प्रतिभा, वैज्ञानिकों का नवाचार और उद्योगों की ऊर्जा मिलकर भारत को वैश्विक चिप क्रांति का नेतृत्वकर्ता बनाएंगे। यदि यह विजन योजनाबद्ध ढंग से साकार होता है, तो आने वाले वर्षों में भारत से विश्वस्तरीय डीप-टेक कंपनियाँ उभरेंगी और देश तकनीकी महाशक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेगा।

प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ते कदम: राजकोट जिला पंचायत में किसान बाजार बना स्वास्थ्य और स्वावलंबन का उत्सव

जीएनएस)। राजकोट। प्राकृतिक खेती को जनआंदोलन बनाने और किसानों को सीधे उपभोक्ताओं से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए राजकोट जिला पंचायत परिसर में आयोजित किसान बाजार में नेचुरल खेती स्टॉल का उद्घाटन उत्साहपूर्ण वातावरण में किया गया। जिला पंचायत अध्यक्ष प्रवीणाबेन रंगानी ने रिबन काटकर इस स्टॉल का शुभारंभ किया और इसे किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में सार्थक कदम बताया। कार्यक्रम का आयोजन गुजरात नेचुरल डेवलपमेंट बोर्ड के सहयोग से किया गया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि राज्य स्तर पर प्राकृतिक खेती को नीति और व्यवहार दोनों स्तरों पर प्राथमिकता दी जा रही है।

उद्घाटन के बाद जिला विकास अधिकारी आनंदू सुरेश गोविंद सहित अन्य अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों ने स्टॉल का अवलोकन किया। उन्होंने किसानों द्वारा प्रस्तुत ऑर्गेनिक उत्पादों की सराहना की और स्वयं खरीदारी कर इस पहल को प्रोत्साहन दिया। अधिकारियों ने कहा कि प्राकृतिक खेती केवल उत्पादन की एक पद्धति नहीं, बल्कि स्वस्थ समाज और स्वच्छ पर्यावरण की दिशा में एक व्यापक अभियान है।

एक दिवसीय किसान बाजार में जसदन, कोटडासंगानी और जामकंडोरना तालुका के विभिन्न गांवों से आए किसानों ने अपने उत्पादों का प्रदर्शन और विक्रय किया। इन किसानों ने रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के बिना तैयार की गई सब्जियां, दालें, ऑर्गेनिक हल्दी, राई और जीरा जैसे मसाले, देसी गुड़, मूंगफली का तेल तथा गुलकंद जैसे उत्पाद उपलब्ध

कराए। इसके साथ ही आयुर्वेदिक साबुन, प्राकृतिक अगरबत्ती और मिट्टी के दीये जैसे घरेलू उपयोग के उत्पाद भी आकर्षण का केंद्र रहे।

किसान बाजार में उपभोक्ताओं की अच्छी उपस्थिति देखने को मिली। लोगों ने उत्पादों की गुणवत्ता, स्वाद और शुद्धता की सराहना की। कई उपभोक्ताओं ने यह स्वीकार किया कि रासायनिक खेती के बढ़ते प्रभाव के बीच प्राकृतिक उत्पाद स्वास्थ्य के लिए अधिक सुरक्षित विकल्प हैं। आयोजन स्थल पर किसानों और ग्राहकों के बीच सीधा संवाद भी हुआ, जिससे पारदर्शिता और विश्वास का वातावरण बना। किसानों ने अपनी खेती की पद्धति, बीज चयन और जैविक खाद के उपयोग की जानकारी साझा की, वहीं उपभोक्ताओं ने भी नियमित रूप से ऑर्गेनिक उत्पाद अपनाने का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम में जिला कृषि अधिकारी तृप्तिबेन पटेल, आत्मा परियोजना निदेशक हसमुखभाई वादी, जिला प्राथमिक शिक्षा अधिकारी दीक्षितभाई पटेल तथा जिला पंचायत के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने किसानों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि प्राकृतिक खेती से न केवल मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है, बल्कि उत्पादन लागत भी कम होती है और किसानों की आय में स्थायी वृद्धि संभव होती है। विशेषज्ञों के अनुसार प्राकृतिक खेती जल संरक्षण, जैव विविधता और पर्यावरण संतुलन के लिए भी लाभकारी है। रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट आई है और जल स्रोत भी प्रभावित हुए हैं। ऐसे में प्राकृतिक खेती एक दीर्घकालिक समाधान के रूप में उभर रही है। किसान बाजार जैसे आयोजन इस परिवर्तन को जमीनी स्तर पर गति प्रदान करते हैं।

इस आयोजन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी रहा कि इसमें स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता दी गई। इससे परिवहन लागत कम हुई और उत्पाद ताजगी के साथ उपभोक्ताओं तक पहुंचे। साथ ही, स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली और किसानों को बिचौलियों के बिना उचित मूल्य प्राप्त हुआ।

अतिथियों ने उपस्थित नागरिकों से अपील की कि वे अपने दैनिक जीवन में ऑर्गेनिक उत्पादों को अपनाएं और प्राकृतिक खेती को समर्थन दें। उनका कहना था कि जब उपभोक्ता मांग बढ़ाएंगे, तभी किसान बड़े पैमाने पर प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर होंगे। यह परिवर्तन केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं, बल्कि समाज की सहभागिता से ही साकार होगा।

राजकोट जिला पंचायत में आयोजित यह किसान बाजार केवल एक व्यापारिक आयोजन नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, पर्यावरण और आत्मनिर्भरता के संदेश का मंच बना। किसानों के चेहरे पर संतोष और आत्मविश्वास स्पष्ट झलक रहा था। उन्हें यह भरोसा मिला कि उनके परिश्रम और शुद्ध उत्पादों की समाज में कद्र है।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए इस प्रकार के आयोजनों की निरंतरता आवश्यक है। यदि प्रत्येक जिले में नियमित किसान बाजार आयोजित हों और विद्यालयों, संस्थानों तथा कार्यालयों में ऑर्गेनिक उत्पादों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाए, तो यह आंदोलन व्यापक रूप ले सकता है। राजकोट में हुआ यह आयोजन इस दिशा में एक प्रेरणादायक उदाहरण है। इससे स्पष्ट है कि जब प्रशासन, किसान और उपभोक्ता एक साथ मिलकर प्रयास करते हैं, तो स्वस्थ समाज और सशक्त किसान का सपना साकार हो सकता है। प्राकृतिक खेती की यह पहल आने वाले समय में न केवल कृषि क्षेत्र को नई दिशा देगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और संतुलित पर्यावरण सुनिश्चित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

एनटीपीसी झनोर–गंधार परियोजना में विकास संवाद
ऊर्जा उत्पादन के साथ सामाजिक दायित्व पर जोर

जीएनएस)। सूरत। देश की अग्रणी ऊर्जा कंपनी एनटीपीसी की झनोर–गंधार परियोजना में 02 मार्च 2026 को स्थानीय मीडिया प्रतिनिधियों के लिए एक विस्तृत प्रेस मीट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य परियोजना की कार्यप्रणाली, संयंत्र संचालन और नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के अंतर्गत संचालित विकास कार्यों की जानकारी साझा करना तथा मीडिया के साथ संवाद को सुदृढ़ बनाना था। इस अवसर पर परियोजना प्रमुख (झनोर) दिनेश कुमार सिंह रौतेला मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) विजय लक्ष्मी मुरलीधरन द्वारा पत्रकारों के स्वागत एवं आभार प्रदर्शन से हुई। उन्होंने कहा कि मीडिया समाज और उद्योग के बीच सेतु का कार्य करता है तथा सकारात्मक पहलुओं को जन-जन तक पहुंचाने में उसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वागत उद्बोधन के पश्चात एक विस्तृत प्रेजेंटेशन के माध्यम से झनोर–गंधार परियोजना की तकनीकी संरचना, उत्पादन क्षमता, सुरक्षा मानकों तथा पर्यावरणीय प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की गई।

प्रस्तुति में बताया गया कि संयंत्र का संचालन अत्याधुनिक तकनीकों और उच्च सुरक्षा मानकों के अनुरूप किया जा रहा है। उत्पादन प्रक्रिया में दक्षता, ऊर्जा संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन को प्राथमिकता दी जाती है। अधिकारियों ने यह भी स्पष्ट किया कि प्रदूषण नियंत्रण के लिए सभी निर्धारित मानकों का पालन किया जा रहा है और नियमित निगरानी प्रणाली लागू है।

अपने संबोधन में श्री रौतेला ने कहा कि

एनटीपीसी केवल ऊर्जा उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि "People Before PLF" की नीति को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। उन्होंने समझाया कि पीएलएफ अर्थात प्लांट लोड फैक्टर से पहले 'लोगों' को महत्व देना कंपनी की मूल विचारधारा है। कर्मचारियों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास के साथ-साथ आसपास के गांवों और स्थानीय समुदायों का समग्र विकास भी कंपनी की जिम्मेदारी का अभिन्न हिस्सा है।

सीएसआर गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा कि कंपनी शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला एवं बालिका सशक्तिकरण, ग्रामीण खेलकूद और आधारभूत सुविधाओं के विकास जैसे क्षेत्रों में निरंतर कार्य कर रही है। आसपास के गांवों में स्कूलों को शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध कराना, छात्रवृत्ति योजनाएं चलाना और डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देना प्रमुख पहलों में शामिल है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में नियमित चिकित्सा शिविर, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम तथा आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है।

महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण एवं आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है, जिससे ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिल रहा है। इसके अतिरिक्त युवाओं के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, ताकि उन्हें स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकें। ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवाओं में स्वास्थ्य और अनुशासन की भावना को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में भी परियोजना की प्रतिबद्धता रेखांकित की गई। वृक्षारोपण अभियान, जल संरक्षण प्रयास और हरित क्षेत्र के विकास के माध्यम से पर्यावरण संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया जा रहा है। अधिकारियों ने बताया कि कंपनी सतत विकास के सिद्धांतों को अपनाते हुए औद्योगिक प्रगति और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए प्रयासरत है। मीडिया प्रतिनिधियों ने विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछे, जिनका अधिकारियों ने विस्तार से उत्तर दिया। पत्रकारों ने विशेष रूप से सीएसआर के तहत किए जा रहे विकास कार्यों की सराहना की और अपेक्षा व्यक्त की कि भविष्य में भी इन पहलों को निरंतर गति मिलती रहे।

कार्यक्रम में अपर महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) रोचक सक्सेना, अपर महाप्रबंधक (तकनीकी सेवाएँ) रश्मिक कुमार बोरिसा, विभिन्न विभागाध्यक्षों, कर्मचारियों तथा बड़ी संख्या में मीडिया प्रतिनिधियों की उपस्थिति रही। सभी ने सामूहिक रूप से उद्योग और समाज के बीच सकारात्मक संवाद को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री रौतेला ने मीडिया के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि कंपनी की विशेष पहलों और सामाजिक दायित्वों को जन-जन तक पहुंचाने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी यह सहयोग इसी प्रकार बना रहेगा और विकास की सकारात्मक कहानियां समाज तक पहुंचती रहेंगी।

कार्यक्रम का समापन सौहार्दपूर्ण वातावरण में होली मिलन समारोह के साथ हुआ, जिसमें सभी उपस्थितजन एक-दूसरे को होली की शुभकामनाएं देते हुए रंगों के इस पर्व की खुशियों को साझा करते नजर आए। इस आयोजन ने यह संदेश दिया कि औद्योगिक विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व साथ-साथ चल सकते हैं, बशर्ते उद्योग अपनी जिम्मेदारियों को संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता के साथ निभाए।

एनटीपीसी झनोर–गंधार परियोजना में आयोजित यह प्रेस मीट न केवल सूचना साझा करने का मंच बना, बल्कि पारदर्शिता, विश्वास और सामुदायिक विकास की प्रतिबद्धता का प्रतीक भी सिद्ध हुआ।

वडोदरा व डाकोर (वाया आणंद) के बीच पूनम स्पेशल ट्रेन.

जीएनएस)। होली व पूनम त्योहारों के मद्देनजर यात्रियों की भीड़ एवं असुविधा को कम करने के लिये पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा 03 मार्च व 04 मार्च 2026 को वडोदरा और डाकोर के बीच पूनम स्पेशल ट्रेन चलाई जा रही है।

ट्रेन नं. 09149 वडोदरा – डाकोर पूनम स्पेशल ट्रेन वडोदरा से सुबह 10:40 बजे प्रस्थान कर दोपहर 12:05 बजे डाकोर पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन नं. 09150 डाकोर – वडोदरा पूनम स्पेशल ट्रेन डाकोर से दोपहर 15:50 बजे प्रस्थान कर सांय 17:10 बजे वडोदरा पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में आणंद एवं उमरेठ स्टेशनों पर रूकेगी। यात्री इस ट्रेन के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

फागुनी रंगों में सराबोर हुआ सूरत: गौड़ ब्राह्मण समाज का होली स्नेह मिलन बना एकता और उल्लास का उत्सव

जीएनएस)। सूरत। रंगों और रिश्तों की मिठास से भरी होली के पावन अवसर पर समस्त राजस्थान गौड़ ब्राह्मण संघ, सूरत द्वारा आयोजित होली स्नेह मिलन समारोह 1 मार्च की रात्रि को अत्यंत धूमधाम और उत्साह के साथ संपन्न हुआ। आई माता रोड स्थित पर्वत पाटिया के माहेश्वरी भवन, सूरत में आयोजित इस कार्यक्रम में समाज के लोगों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। फाल्गुन की मस्ती, पारंपरिक गीत-संगीत और आपसी भाईचारे की भावना ने पूरे वातावरण को रंगमय और उल्लासपूर्ण बना दिया।

समारोह का आयोजन समाज के युवाओं के नेतृत्व में किया गया, जिसने कार्यक्रम में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया। युवाओं की सक्रिय भागीदारी ने यह दर्शाया कि समाज की परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी नई पीढ़ी ने पूरी निष्ठा से संभाल ली है। कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठजनों से लेकर बच्चों तक सभी वर्गों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और सामूहिक उत्सव का आनंद लिया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम की शोभा में चार चांद लगा दिए। प्रसिद्ध कलाकार नरेंद्र शर्मा 'चंचल' एंड पार्टी ने अपनी सजीव प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। मारवाड़ी लोकनृत्य और फागुनी गीतों की धुन

पर उपस्थित समाजजन देर रात तक झूमते रहे। पारंपरिक वेशभूषा में सजे कलाकारों की प्रस्तुति ने सभी को राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत से जोड़ दिया। ढोलक और हारमोनियम की थाप पर जब फाल्गुनी गीत गूंजे, तो माहौल पूरी तरह होली के रंगों में रंग गया।

कार्यक्रम के दौरान समाज के वरिष्ठ सदस्यों, समर्पित कार्यकर्ताओं तथा विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने वाले युवाओं को दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। यह सम्मान समारोह समाज के लिए प्रेरणादायक क्षण साबित हुआ, जहां अनुभव और युवा ऊर्जा का सुंदर संगम देखने को मिला। समाज के अग्रजों ने युवाओं को मार्गदर्शन देते हुए एकता और संस्कारों की परंपरा को बनाए रखने का संदेश दिया। बच्चों की प्रस्तुतियों ने भी सभी का मन मोह लिया। छोटे-छोटे कलाकारों ने रंगारंग सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत कर तालियां बटोरीं। समाज के ही गायक कलाकार संतोष एवं अनुराग शर्मा ने देशभक्ति गीतों, मारवाड़ी लोकगीतों और फाल्गुनी होली गीतों की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम को भक्तिमय और उत्सवमय बना दिया। जब 'होली खेले रघुवीरा' और पारंपरिक मारवाड़ी फाग गूंजे, तो उपस्थित महिलाएं और युवा अपने कदम थिरकने से नहीं रोक सके। माहेश्वरी भवन खचाखच भरा हुआ था, फिर भी व्यवस्थाएं सुव्यवस्थित रहीं। भोजन की उत्तम व्यवस्था की गई थी, जिसमें पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद सभी ने आनंदपूर्वक लिया। भोजन के बाद भी कार्यक्रम का उत्साह कम नहीं हुआ। महिलाएं, युवा और बच्चे देर रात तक संगीत और नृत्य का आनंद लेते रहे।

इस होली स्नेह मिलन समारोह ने समाज में आपसी प्रेम, सहयोग और एकता का संदेश दिया। वर्तमान समय में जब भागदौड़ भरी जीवनशैली के कारण लोग सामाजिक आयोजनों से दूर होते जा रहे हैं, ऐसे में इस प्रकार के सामूहिक कार्यक्रम समाज को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करते हैं। यहां केवल रंगों का उत्सव नहीं था, बल्कि रिश्तों को सहेजने और नई पीढ़ी को संस्कारों से जोड़ने का प्रयास भी था।

क्रूड ऑयल वायदा में 510 रुपये की तेजी: सोना वायदा में 6914 रुपये और चांदी वायदा में 13935 रुपये का ऊछाल

जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 188898.88 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 49235.86 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 139662.27 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का मार्च वायदा 41670 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 5030.82 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 39241.49 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा 165501 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 169679 रुपये और नीचे में 165217 रुपये पर पहुंचकर, 162104 रुपये के पिछले बंद के सामने 6914 रुपये या 4.27 फीसदी बढ़कर 169018 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-गिनी मार्च वायदा 6497 रुपये या 4.94 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 138146 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल मार्च वायदा 782 रुपये या 4.73 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 17328 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी अप्रैल वायदा 162899 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 169842 रुपये और नीचे में 162240 रुपये पर पहुंचकर, 7039 रुपये या 4.34 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 169075 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन मार्च वायदा प्रति 10 ग्राम 162761 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 172000 रुपये और नीचे में 162761 रुपये पर पहुंचकर, 162274 रुपये के पिछले बंद के सामने 7600 रुपये या 4.68 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 169874 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया।

चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा 282644 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 297799 रुपये और नीचे में 282643 रुपये पर पहुंचकर, 282644 रुपये के पिछले बंद के सामने 13935 रुपये या 4.93 फीसदी की तेजी के संग 296579 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 15816 रुपये या 5.54 फीसदी की तेजी के संग 301553 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 15712 रुपये या 5.5 फीसदी की बढ़त के साथ 301469 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। मेटल वर्ग में 2758.32 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा मार्च वायदा 5.7 रुपये या 0.47 फीसदी की बढ़त के

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 49235.86 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 139662.27 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 39241.49 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 41670 पॉइंट के स्तर पर

साथ 1228.05 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि जस्ता मार्च वायदा 4.7 रुपये या 1.44 फीसदी की मजबूती के साथ 331.25 रुपये प्रति किलो बोला गया। इसके सामने एल्यूमीनियम मार्च वायदा 10.7 रुपये या 3.42 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 323.5 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा मार्च वायदा 60 पैसे या 0.32 फीसदी चढ़कर 190.15 रुपये प्रति किलो हुआ। इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 7056.89 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल मार्च वायदा 6210 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 6733 रुपये और नीचे में 6210 रुपये पर पहुंचकर, 510 रुपये या 8.37 फीसदी की तेजी के संग 6602 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी मार्च वायदा 510 रुपये या 8.37 फीसदी की तेजी के संग 6606 रुपये प्रति बैरल हुआ। इनके अलावा नैचुरल गैस मार्च वायदा 266.5 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 278.5 रुपये और नीचे में 264.9 रुपये पर पहुंचकर, 262.3 रुपये के पिछले बंद के सामने 9.2 रुपये या 3.51 फीसदी की तेजी के संग 271.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा। जबकि नैचुरल गैस-मिनी मार्च वायदा 9.4 रुपये या 3.58 फीसदी बढ़कर 271.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल मार्च वायदा 957.9 रुपये पर खूलकर, 1.8 रुपये या 0.19 फीसदी की तेजी के संग 956.1 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 27043.37 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 12198.13 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1806.24 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 490.67 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 16.74 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 444.67 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 5118.20 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1919.82 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 9749 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 76160 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 26193 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 377391 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 50974 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7448 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 17404 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 59400 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 23336 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 27541 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स मार्च वायदा 41630 पॉइंट पर खूलकर, 41670 के उच्च और 41502 के नीचले स्तर को छूकर, 1189 पॉइंट बढ़कर 41670 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल मार्च 6500 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 210.4 रुपये की बढ़त के साथ 454.2 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मार्च 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 4.15 रुपये की बढ़त के साथ 14.1 रुपये हुआ। सोना मार्च 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 567 रुपये की बढ़त के साथ 871 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मार्च 400000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 836 रुपये की बढ़त के साथ 3259.5 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1.65 रुपये की बढ़त के साथ 15.23 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 340 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 57 पैसे की नरमी के साथ 3.24 रुपये हुआ। पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल मार्च 6500 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 252.6 रुपये की गिरावट के साथ 411 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मार्च 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 4 रुपये की गिरावट के साथ 16.85 रुपये हुआ। सोना मार्च 160000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 1531 रुपये की गिरावट के साथ 2339 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मार्च 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 316 रुपये की गिरावट के साथ 1190 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2.53 रुपये की गिरावट के साथ 22.59 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 60 पैसे के सुधार के साथ 5.9 रुपये हुआ।